

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अं नमः सर्वज्ञाय ॥ ० ॥ यस्य ह्यनदयासिं ध्वं वगधस्थानघातुमाः । सव्यात्मकयाधीनाः सप्रियवसिना
 यव ॥ १ ॥ ममाह्वयान्यगकाभि सदिक्केपुनिसंस्तुतेः । संपूर्णसुखावर्गः नामलिङ्गानुसासर्ज ॥ २ ॥ प्रयः
 (अत्रूपरदनसाहचर्योच्चरुणविण । सुपुंनपुंसककुर्यं सदि (अपविधः कवित् ॥ ३ ॥ रुदाव्यानायनद्वंद्वाने
 क (अपानभक्तवः । रुताशिरिन्नलिङ्गनामनकानां कमादम ॥ ४ ॥ शिलिङ्गां शिषिनिपि ~~विधुनवद~~ योनिः
 जि । निषिद्धलिङ्गभयार्थं त्वकाथोदिनपूर्वलाक ॥ ५ ॥ स्ववश्ययस्वमेनाकशिदिवशिदभालयः । सुनलोका
 यादिवोदस्थियां कीवशिषिष्टप ॥ ६ ॥ सुनदीहिदभावाधः सुवमसुनालयः । उर्ध्वलोकादवलोका (गप

स्वर्गयानाम ॥ १ ॥ दवल्लिखनाम ॥ २ ॥ सामान्यदेवतायानाम ॥ ३ ॥
 मादित्यसमव ॥ १ ॥ अमवानिर्कृतादवाः शिदभाविबुधः सुनाः । सपद्माः समनसः हिदिवभादिवोक
 सः ॥ ६ ॥ आदित्ययाः दिविषदाः त्वाश्रुदिगिर्नदनाः । आदित्याश्चिरवाः स्वप्रा अमर्या अमृताधमः ॥
 ॥ ८ ॥ वदिर्मत्वाः कउरुजागीर्वाभदानवाजयः । वद्यावकादेवतानिपुंसिवादवतालिया ॥ ९० ॥ पीयू
 षया अनिमिवा विपस्वत्सुवद्विषः । आदित्यघादभात्यागा विषुदवादभस्मना ॥ ९१ ॥ वसवश्चावृत्तः
 त्यागा सुषितालिंसिगिषमः । राधवश्च उषधी पवास्वननिलानथ ॥ ९२ ॥ माहाबाजिकुनामानाद
 भगविभगिस्थ ॥ साध्याश्च घादभात्यागा बुडाश्च कादभाग ॥ ९३ ॥ आदित्यनि

स्वर्गानिलाः॥सहायकिकसाधवुडाअगदवताः॥१४॥विद्याधवाःसवायद
 नवाः॥पिमावाउककसिद्धा॥रुगमीदवयानयः॥१५॥अमवादेत्यदेमयदनऊन्दाविदानवाः॥१६॥
 कभिषादिगिसुताःपूर्वदवाःसुवदिषः॥१७॥सर्वरुःसुगतावडाधमेवाऊरुथागगः॥समरु
 डारुगवासांनकिञ्जाकजिजिनः॥१८॥षउंरिऊदमवेजदयवादीविनायकः॥सुनीमुंभीघनः॥
 मासासुनिः॥अकसुनिरुयः॥१९॥सभाकसिंहसवीथसिद्धः॥भीडादनिधसः॥गेगमसांरु
 वभुधेमायादवीसुगथसः॥२०॥वक्रालरःसुवयः॥यवमष्टीपिणामहः॥हिनअगलीला
 उथरुयसमग्रस्यधमेत्ययभः॥अियः॥वेगयस्याथमाकस्य॥षउंरिगळीनसुगः॥गदान॥३॥दिव्यवदुदिव्यः॥अगपूर्वनिवातादुदिव्यः॥

कमःस्वयंरुधुजाननः॥२०॥धगाऊयानिर्द्धिः॥विचिकिःकनसासनः॥सुद्धापकापनिर्व
 धाविधगाविश्वरुगिधिः॥२१॥विधकडौवउर्वरुः॥भीउलाकेधपमऊः॥२२॥वक्रयानामवि
 रुतावायलः॥कषुवेकुः॥विदुवअवाः॥२३॥दामादवर्द्धीकमः॥कभवामाधवः॥स्वरुः॥
 ग्याविः॥पुंउबीकाक्राः॥रुविन्दागवुधऊः॥२४॥पीणाम्बवाः॥युगः॥अऊः॥विचकुः॥लनाऊनाई
 नः॥उपदुळ्ळाववजः॥अकपाणिः॥अऊः॥२५॥पमनागमधुविपुः॥सीरुदवसिदिकमः॥
 दवकीनन्दनसोविः॥भीपनिः॥पूर्वधालमः॥२६॥वनमासीवसिध्वसीकसावागिर्वः॥अऊः॥

सुदयासुदीमविः

॥ विश्वरूपः केवलजि दिवः श्रीवत्सला कुनः ॥ २६ ॥ पुवाणपुत्राय ह पुत्रधानचक्रकः ॥ गल
 भावीविश्वरूपा मुकुन्दः सुवमर्दनः ॥ २७ ॥ भावगवन्नावर्षाह यल्लु (गमहवाहविः) ॥ नावायन
 यानाम ॥ वसुधवस्यजनकः सप्रवानक इन्द्रिः ॥ वसुधवयानाम ॥ २८ ॥ वल्लुः प्रसवध्या व
 लदवाऽयुगायुजः ॥ ववगीवमनोवामः कामपालाहलायुधः ॥ २९ ॥ नीलाम्बुलोहोहि (अयक्ता
 लाक्षामुमलीहली) सकिर्षलभीचपालिः कालिन्दीरुदनावलः ॥ ३० ॥ साङ्गसीगालसक्कीव
 वगीपनिवर्तमः ॥ वल्लुदयानाम ॥ मदनामन्म (धमालेः) प्रधुन्मीनकेगनः ॥ ३० ॥ कन्दर्पी

दर्पकानिर्गः कामः पकः सबः समवः ॥ समवाविर्मनसिगः कसुमपुर्वनन्यजः ॥ ३२ ॥ पुष्यधन्वाव
 शिपनिर्मकवधज्जालमरुः ॥ मनारुजवकभध कसुमायुधहृद्योः ॥ ३३ ॥ सूर्यकाविश्विरुथानि
 विषयकनात्मजः शिपिः ॥ कामदवयानाम ॥ वल्लुसूर्यध्वकऽयुः ॥ वल्लुयाकाययानाम ॥ दनिबुद्धः
 उवापनिः ॥ कामदवयाकाय अनिबुद्धयानाम ॥ ३४ ॥ सक्कीपमालयापमा कमलाधीहविप्रिय
 वल्लुन्दिलोलीकमाणामा कीवाऽद्विगनयावमा ॥ ३५ ॥ विक्रयाह्वीयानाम ॥ ॥ मेवोसक्कीपगऽपा
 च्छुऽन्य नावायनया धीवयानाम ॥ ध्वकः सुदर्भर्जः चक्रयानाम ॥ कोमादकीगजो गदायानाम
 त्व (अनन्दक) ॥ त्वजयानाम ॥ कोलुगनलिः ॥ मलियोकेनाम ॥ ३६ ॥ गवुस्मानुगवुत्तादावे

पिलिपिलापमहस्ताभाडकी विष्णुवत्समाः

[illegible]

काठुकध्यानां३ कचननां१ क्वञ्जउत्तुनंतुनां३ क्वञ्जमापत्तनां१
ना१

कुर्वन्मादसनाः विमानयानाः किं न जनाः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

लषइसुपायांनाः ३ मलया नः ३

कलिकायानः २

सप्तमः

सुहायानाः१

विक्रयानः २

चापूदाया नां

सिद्धसंघानां: २

[illegible]

पुष्पना नगुयोनाः २
नयानाः १

हाडव्यानां: १

असूनिनैष्ठ्यानाः २

२२ लालानकुपानाः १

शुक्रया नं २

अंगप्रधानः २

वृत्त्यनियानाः ९

कानि वसन्ति याः १ वृद्धस्य निःसूया वार्थो गोप्य निर्विषा ॥ २ जीव आंगि न सा वाचस्य निश्चि गृहीत्व ह्रिज ॥ ३ कृष्ण
 दैत्य गुर्वृकाय उडाना शर्म वृक वि ॥ ४ जंगल न ककु जोरुमा लादि गां ॥ ५ मदी सन ॥ ६ बोदि ॥ ७ यो वध ॥ ८ सोम्य ॥ ९ सभो सोमि
 हाने च नो ॥ १० तम सुबाहू ॥ ११ स्वर्कान् ॥ १२ सोदिक
 नाम दयालग्नं ॥ १३ गुह्यमप्यवद्यादय ॥ १४ सुव
 न विराकना ॥ १५ शास्त्र विवस्वत्सफ अद्रि निद ॥ १६ न ह म य ॥ १७ वि कर्त्तु नार्क मार्क ॥ १८ मिदि नान् ॥ १९ पूष ॥ २० यम हि

वृद्ध्या नोः ३

लाइया नां: ३

लाभिया नां२

प्रकृषभिया नोः ३

निमग्नयानाः १ शुभ्यकिजनंभानाः २ इति वाक्कुर्वन् गीयानाः १ नाकं का गीयानाः १ हां दुःखयानाः १

चाक्रययों:३ कक्रयचाक्रययानों:२ पञ्जातलियानों:१

पुक्रिया नां: ९

हं मासीरुपुहं मा॥ कलादीनमानमि॥ पू॥ नाका निहा कन॥ जूमा वास्या त्रमा वस्या दहं॥ सूर्यो न्दसं गम॥ सा हृष्ट
द॥ सिनी वाली. सानक्षन्दकै कलाक ह
ग्या लात उयादिग॥ एकथा क्कपुष्य व
ला॥ गारुणिहा कृहा कृ सुमहर्ला दाद
कृष्टे मास कृ गा वृ॥ दो दो मा घादि मा सो स्या दृष्टे नय नंतिरि॥ अयन द गति नूद क द कि क्षा के स्य व स न॥ स

शुद्धगुपक्रिया नां: ९

॥ उयना (गाय) क्षा ना हू. गुरु विदो वयुष्टिव॥ साय प्रवाय न को दाव
को दि वा क न निहा क नो॥ जूसा दहानि भया कृ का सा गिं हा कृ गा॥ क १०
हासि यां॥ गुरु गं हा द क्षा ना उ॥ य कृ कृ द हा पं व व॥ प को पू नो गु क
दृष्टे नय नंतिरि॥ अयन द गति नूद क द कि क्षा के स्य व स न॥ स
वि २

अथा वा सा पा नां ९

२ मास सारु निवस्य २

पुक्रिया नाम

पौष मा ना म

मा पमा ती न

मना सिं दि व काल विष्व दि म्व कृ ग ग॥ पुष्य यू का पो हं मा सी. पो वी मा स रु य ग सा॥ ना ना स पो व मा घा या (ये व
म का द क्षा य न॥ मा यो ही र्षे स दा मा यो जा ग सा य नि क लु य॥ पो य र्ते व स द ह्यो धो. ग पा मा य थ रु लु ति क॥ स्या त्र ग र्ते क
म धू॥ वे हा र्थ मा ध वा ना (धा कृ कृ हा कृ
सु नै र्ग स्य पो स्य द सा दू य दो॥ समा॥
कारु कि का द न क॥ ही नि ना ति यां॥ व स नू पृ षा स म य॥ सु न रि गो म् उ षा क॥ ति दा च उ षा य ग म उ षा उ षा

ल ३ २

ममस्तु यः॥ क्रियां पाददृष्टिं यां हनिवर्षां अथ नवगुह्यां॥ सउमी अतव ४ यं सि. मा र्को दीनां यू (गे १५) ता न। स च सु	नस्या दक्षानां ४ पे शा व र्ष ६ दे व क ११ दे व यू ग स द स द. वा क्त ४ कः
ना वस्तु ना ३ दा दा य ना मु ६। न स ना॥ मा स	मा ना भ क स य नि ४॥ स च रु १ पु ल यः क ल्या ४ क य ४ क ल्या क ४ ११
ल्यो हु ना न्द ४॥ म न्चु क न उ दि या नां. यः	ल्य ४ क ल ४ वं वृ जि ने ना घं ने हा द नि त दृ क्त ४॥ स्या च र्म स क्रि यां
या। ज स्तु यं क यू मा या. पा यं कि लि ष क	यू ल्यं (६) य सी स रु तं वृ ४॥ म ल्यी नि ४ पु म दा रु र्ष ४ पु मा दा शा द स म्म दा ४॥ स्या दा न द थू ना नं द ४ स र्म सा गं स र्म

नि व॥ ६ व ४ (६) य सं वि वं र डं क ल्या नं मं ग लं वृ रं॥ रा व कं र। दे कं र वां. कृ ण लं क म म क्रि यां। ६। रुं वा थ वि वृ ड वा पा यः	नी का न्द ४ वी जं. नि दा नं वा दि का न ६॥ कृ ण रु आ सा य नू ४ य धा
पू ष्ठ स र्वा नि व॥ म ग ल्लि का म व र्चि का यु का हु म् चू त ल जौ। पु स रु वा व का न्य मू न्य य ४ वृ रा व दा वि धि॥ दे वं दि रं रा	व रु रु ६॥ ४ स चं न रु रु मं॥ ४ नू रु न न रु मा नि ज नि नू य रु रु
ग ध यं रा ग्म रुं नि य नि वि धि ४॥ रु रु	ह व ४॥ पा णी उ व र ना ज नी ज रु न्यू ४ नी निः॥ जा नि जा नं व सा मा न्यं. वा कि रु य थ ग सि का। वि रु रु य ता द यं स्या कं द
नं य रु नि ४ क्रि यां। वि (६) व र्च का लि काः	

उलुलासिका॥ अथ मधुनंसात्वं संगतदयंगतम्॥ निवृत्तं वृत्तं ग्राम्यं मधुलं सुनृगं पिवरसं यथसंकुलः
 किं वनस्य वयनाहता लफ वलुपौर्दं गुरुं निवृत्तं त्वनिगादितां॥ अचक्रं सति वृत्तं मवदं स्याद नर्थकं
 अथानिष्टमविष्टं विनथं त्वनृगव व॥ सत्यं गथं मृगसम्यं गमूनिष्टि वृत्तं दृति॥ अथानिनादने १५
 नदध्वनिध्वनन वस्वना॥ स्त्राननिर्धा विनिर्जायनादनिस्त्राननिस्त्रना॥ अनवानावसंवाव विनावा
 अथमर्मनशास्त्रनिगवक यलुनां रूषवनाकृतिं जजिगं॥ निकाक्षानिकाक्ष॥ काक्षकन॥ कक्षनमिष्टयिवा

२. अथ द्वादि वग

क्षयाः कनिष्ठयादयकान॥ यकक्षदय॥ कालाहल॥ कलकल॥ स्त्रिगं वासिगं वृत्तं॥ स्त्रीपनिष्टं यपनिध्वन
 गीतं गानमिमसम॥ निषादवर्गगाक्षान॥ यकमध्यमध्वेवगा॥ यं वम॥ यथमी सफरकी काक्षिणा॥
 स्वना॥ काकलीकुर्कलसूक्ष्मध्वनो दुमधुवास्तु॥ कलामदुसुगं रीन॥ गानाथुवेसु यलु वृत्तं
 मविगलयस्तक॥ गालावी॥ गानुव लकी॥ विपंदीसाहुतकीरि॥ सफरि॥ यनिवादिनी॥ गगंवी॥
 क्षादिकं वाय॥ मानदं मृगजादिकां॥ वंक्षदकं उलुषिगं॥ कां स्यगालादिकं द्यवां॥ वलुर्विधनिदं वायं॥ वादिगा

नी घनामकं। मृदंगमन्त्राश्च दक्षालि। मन्त्राश्च कामुयः स्यायः ४ पट्टाटका। रमणीयं दृश्यं ज्ञानतः ४ पट्टा
 ३ सुखा का। विवादिवादनं। विवादिवादनं ४ युवा लस्या कुरुमु प्रकावक ४। कालं वं कुरु कार्या स्या इयना क्षानि
 नैवेदं नं॥ वाद्यप्रदा उमनौ सुमम
 ३ नं॥ मर्दल ४ युवा वाद्य व. नर्तकी लासिकसम। विलम्बि गं
 ३ नं॥ मर्दल ४ युवा वाद्य व. नर्तकी लासिकसम। विलम्बि गं
 ३ नं॥ मर्दल ४ युवा वाद्य व. नर्तकी लासिकसम। विलम्बि गं
 ३ नं॥ मर्दल ४ युवा वाद्य व. नर्तकी लासिकसम। विलम्बि गं

१०

निनर्तक ४॥ सुवर्णधनी पुनः धनाया को गणिका ३ रूपा। रगिनी यतिना वृत्ता। शवा विधानथा वृत्त ४॥ जनका
 युवना जसु. कृमाना रूपा दानक ४॥ नाजा रूपा दानका दव रुत्स गारु रूपा दानिका ४॥ दवी रुपा रिध काया मिगना
 सूचरुदिनी ॥ अजसु धमव धमको
 निर्वद ४॥ अजसु धमव धमको
 निर्वद ४॥ अजसु धमव धमको
 निर्वद ४॥ अजसु धमव धमको

क्षाद्रुगदास्यरयानका११वीरसुनोऽवनसा११गंगन११विनूकल११उत्सादवर्धनावीन११कावृक्षंकनूक्षायः
 क्षाद्रुगदादयानकंयास्यादनूका११य
 द्रुतमाश्रयविशमयुथरेनवं॥दा
 गममीरिष्यावदुर्दहादनगशोरी
 हिमानादंकाभामानविरुसुमूत्रकि११अनादन११यनिरव११यनिरावलिनक्रिया॥वीछावमाननाबहाजवदल
 वाहा

मसूकं११मन्दाकंजीरुयावीजलकासापकयान्यक१॥काकिरुकिदाकिष्ठाउपनखविषयस्यहा॥अकाकिनीर्थास्यउ
 दावाभापागुहधमि॥वेनचिना॥धाविदधा॥मन्त्र॥काकोउहुकक्रिया॥यश्चकापान्तापयविषयीसावृक्षयि॥कापंकाधाम
 र्वंशमं॥प्रतिधावृद्धकाधोक्रियो॥उवोउच
 ददं॥००काकाकास्यदहाहदांहालिसाम
 चिका॥पंस्याधिमानसीयथा॥स्याचिका॥मृकिनाधानं॥मला॥काकलिकसमी॥उत्सादाधवसौय
 स्यात्सवीर्यमनिहाकिरा

क॥ कपटं छीयाजदका यधयच्छुके गवा कृति निहति ॥ अथं पुमायान् वधाना ॥ कोरु हलं कोरु कं व कुरु कं व कुरु
 हलं ॥ अं विलास विवाक विरमाललि ग कथा ॥ हलालील यमी दावा ॥ क्रिया ॥ हृ ज्ञान राव जा ॥ उव कलि पवी दासा ॥ कीज
 लीला वत मव ॥ या जाय द ॥ हल कं व
 रिथ कान गुफि ॥ स मो सध ग सं र मो ॥
 माक्ष नाम ह र्ष ॥ अदि गं नू दि गं कृ सं हं र मु गि धृ हं र ॥ विप्र लं शा विहान्वादा विंग हं र व ल न स म ॥ स्या निज हाय नं स ॥

१८

पः ख प्रः सध हा नू लयि ॥ गन्दी ॥ प्रमी ला उ कृ टि र्क कृ टि र्क कृ टि ॥ अथ ॥ अह सि ॥ स्या द सा म्य कि सं सि वि प्र क नी लि म ॥ ख नू
 पक्ष ख रा व थ नि स र्ग अथ व प थू ॥ कं पा ॥
 जू धा रु व न पा गाल वलि स न न सा ग लं ना
 अं व पा ह्यु वि ॥ ग र्म व ॥ अ वि ह्य र स न
 उ र्ध्व ग म सं की ॥ अ व र म स क म ॥ वि ह्य क क म स ना ॥ का उ व रा रु दी ह्य व ॥ अ पा ॥ न का वा स कि रु स र्पा ना ॥ अ थ ॥ ग न

॥ अथ व र्ग ॥ ॥

ध्याश्चिजातादोनोऽसमृद्धिकाः क्रीवश्चनावनावाधैर्गीर्तनोर्केनिलिष्णुः ॥ निष्ठागाम्नायसन्नाइहृः कलुषाइनहृः
 विलशानिन्वंगरीवः गम्भीरमूलनंतदिः यथ्यथा ॥ अनाधमगलेस्यर्हा केवर्लयाहाधावभोगाना यवंसिजालं
 स्याद्दृढसुखं यद्विकु कं ॥ मस्याध्यानीक तर्हीस्याद्यदिहं मस्यवधनं ॥ यथुनामामृषामस्यामीनावेष्टानि 21
 एषाश्छुजः ॥ विज्ञादः कलीवाधं ग उकः ककुलार्ककः ॥ सदसुदंष्ट्रयाठानः ॥ उत्प्रीहिह्युकाः सभा
 नलमीनमिलिविमः ॥ यस्त्रीमुहा रुलीधयाः ॥ द्वाजहृमस्यसंज्ञागः ॥ याताधानमधमवाः ॥ नादतामद्रुनः

वहनी २

लाजाजीवः ककुलस्त्रिमिश्रितमिगिलादयश्चाथयादांसिजलं जकवः ॥ गरुदाः हिह्युमानादः ॥ कवामकनादय
 ॥ स्यात्कुलीनः ककेटकः ॥ कूर्मकमः ॥ कच्छयोगाग्रहानुकमुः ॥ कम्भनाथमहीलगाः ॥ शुधुपदः ॥ किबूलकाः ॥ निहाकाः ॥ गधिः
 कासमूत्रकयादुजलोकायां सिध्यांरु मिजलोकाः ॥ मकास्तः ॥ दः सिध्यांरुकिः ॥ हं वः स्यात्कचुनरिथो ॥
 द्वाजहं वः ॥ हं वः नवाः ॥ हं वः काजलह्य कयः ॥ रं कमधुः ॥ कवर्माः ॥ हं लूनः ॥ वददः ॥ नाः ॥ हिलीगः ॥ यदः
 कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥ कीवर्माः ॥
 वयः ॥ नः ॥ नः ॥ नः ॥ नः ॥ नः ॥ नः ॥ नः ॥ नः ॥ नः ॥

हावसुनिधानंस्याद्वयकृपजलाक्षयापृथ्वान्प्रदीक्ष्यउदयानरुपंशिवा॥नमिस्मिन्काश्यपीनाक्षमृत्विनन्दनम
 नस्ययत्॥यक्षनिष्ठांशुत्वागंस्यार्दत्वा
 गंदवत्वातकं॥यज्ञाकनकजगत्तुङ्गीकाक्षान्नमस्तुभ्यं॥वदन्त
 ॥यल्ललंवाल्यासवावायीकुदीर्घिका
 ॥वयकृपनिष्ठाक्षान्नमस्तुभ्यं॥वदन्त
 पाथनदीसुनिगागंनगिणीहोवलि
 नीगदिनीप्रदिनीधूनी॥आतमनीदीयवनी॥वकीतिनमस्तुभ्यं॥
 गंगंविष्णुपदीजङ्गनयासूत्रनिनमस्तुभ्यं॥रागीनथीप्रिय०गंगिणीगङ्गीकन्यादि॥कालिन्दीसूर्यतनयायम

कलः

नाक्षमनस्वसारनवाहुनर्मदासामाह्वामूकन्यका॥कनगायासदातीनावाहदासेगवादिनी॥गिगङ्गुहागङ्गुस्यादि
 पाक्षकुविद्यास्त्रिया॥होहोदिनक्ष
 वाहस्यागङ्गुलीस्याकृत्तिनासुनिगासनावनीवशवनीवदुशा
 मसस्त्रेवंगी॥कावनीसुनिगायाश्चस
 म्दयश्चिन्मसंगमश्चयश्चक्षालीययसश्चयश्चकृत्तिवृहवी॥
 दविकायांसनयाश्चरुवदाविकसानवी
 सोगाधिककृत्कलावदक्षकंनकंसन्धकं॥स्याद्वयलंकवलयम
 थनीलाचूजमवाह्वीवनश्चनीलसिन्धुसिगकमदकेनवा॥होहोक्षकंससांकन्दस्यादानियर्क्षीकुक्षिका॥जलन

लीला हो बालं हो वलाथ कमधनीर कमदिन्या नलिन्या कु. विमिनीपमिनी मूखा ॥ पैं बोसियमन्नलिन मवविन्दम
 हांयनं स सुययं कमलं हा गयकु हा हा यं ॥ य (कनूदं नाम वसं सावसं सवसी नूदं वि सपुसू नवाजी वं य
 कनाश्वानुहा निव ॥ पृष्ठु नीकं सितां राज मथनक सनानुद ॥ वका सलं का कनदं नालीना लमथा छियां ॥ मृ २३
 लं वि समूजा दि कु दध्व वलु म छियां कन हाट ॥ हा क द ॥ कि ॥ ल्क ॥ बा हा नां छियां ॥ स म्बलिं का न द द
 लं वीरु का वा व नाट क ॥ जं ला व ना वा नि वी नू नर्ह नी वि न्द स म्ब वा ॥ उ कं सु र्थो न दि का ल धी हा दा दि स ना य कं ॥

पाताल लानन का वा निवे मा क संग मं ॥ ॥ पाताल व ग्री ॥ ॥ ल्क सु म न सि ह रु गो ना म लिं ग नू हा
 स न सां ग व व स म र्थ ग ॥ ॥ व ग्री ॥ पृष्ठी यून क्क ह द नो व धि म्ब ग दि शि ॥ न व क्क द ग वि द्यु
 दे ॥ सां गा पां गो नि हा दि गा ॥ ॥ रू रू मि न व ला न का न सा वि ह्व क्क ना छि वा ॥ ध ना ध नि जी ध न दि ॥ का ली का का ध यी
 कि नि गा स र्व स हा व स म ती व स म्ब र्वा व स म्ब नां गा ज कू ॥ पृष्ठी वी पृष्ठी क्क व नि र्मा दि नी न दी ॥ मृ न्द रि का
 प्र हा हा उ म्ब सा म्ब ला व म्ब रि का ॥ उ र्व ना स र्व हा सा हा सा य ॥ ॥ क्क न म्ब रि का ॥ उ व वा न व ना धा न य न्द रि गो क लं

ली। सुमानो मधु चानो धविला यदत समगि धाज गनीला कविष्टं मुव नंजगात् लाका यं शनं व र्धनं वा वला सुया
 व ॥ १ ॥ दन ॥ याग्यदि ॥ १ ॥ याच्यन्दी ॥ १ ॥ य ॥ १ ॥ यिभारु नर ॥ १ ॥ पुत्रका सुदुद ॥ १ ॥ पुत्रो नमधुदु ॥ १ ॥ सुमधुम ॥ १ ॥ अर्था वरु ॥
 पृथ्वरु मि मधु मधु दि मालु या रानी वरु ॥ १ ॥ नयदा दहो विषयो र्मुहं तं ॥ १ ॥ विष्वा नय या य नवान्न शल ॥ १ ॥ विष्वा पि र्मुहं ॥ २४
 दयाय वंगत्यान् वरु वरु ॥ १ ॥ गदल ॥ १ ॥ हादहनिग सुज मालु उ पां किल ॥ १ ॥ जल प्राय म नू पं त्यात् ॥ १ ॥ पं सिक द रु थ
 विघः ॥ १ ॥ हा क ना हा क निल ॥ १ ॥ हा क नर हा क ना वति ॥ १ ॥ दहा ॥ १ ॥ नादि मा वव ॥ १ ॥ म न या ॥ १ ॥ सिकता वति ॥ १ ॥ दाहा ॥ १ ॥ न य ध्व ॥ १ ॥ सु म् स म्

नि

नवाहिया लित गत्या नदी माह का दव माह क म् यथा क्रमं ॥ सुनाहि दा हा ना रु चानु स्या रु मा नय ना रु वा न ॥ १ ॥ ग हा हा वा न कं ग रु
 गो सी नं रु ग पूर्व कां ॥ १ ॥ पर्य क रु ॥ १ ॥ य नि स न ॥ १ ॥ सु रु
 ध प रु न ॥ १ ॥ य द वी रु ति ॥ १ ॥ सु न ति ॥ १ ॥ यं ज ति ॥ १ ॥ यया व रु न्य क यं दी ति वा ॥ १ ॥ अ ति य रु ॥ १ ॥ सु प रु न्य हा ल्य थ आ दि
 ग ध नि ॥ १ ॥ य धा द नु धा वि प थ ॥ १ ॥ क द धा का य
 थ ॥ १ ॥ सु मा ॥ १ ॥ अ प रु न्य प थं नु ल्य रु ज्ञा ट क व रु ॥ १ ॥ ॥ ॥ पा रु नं द न रु न्या
 धा का ना र्वा व रु द नं मं ॥ १ ॥ ग रु ति रु मी का हा य ग न ल्व ॥ १ ॥ कि रु व रु ॥ १ ॥ ॥ ॥ घ धा प थ ॥ १ ॥ सं स न हां ग रु न स्या प नि रु वं ॥

ला

॥ कविचर्या ॥

॥ पृथ्वीवृत्तीनगयोः

हस्तः वृश्चिकः जनसमाख्यः ॥ १ ॥ अथ वृश्चिकः तिष्यथा
याः पाकानां वनहस्तः सालः ॥ २ ॥ अथ वृश्चिकः तिष्यथा
हस्तः सप्तमिकः गतः ॥ ३ ॥ तिष्ठति वृश्चिकः सदनं रक्तं

याः विषयः ॥ ४ ॥ पृथ्वीवृत्तीनगयोः ॥ ५ ॥ अथ वृश्चिकः तिष्यथा
तिष्ठति वृश्चिकः सदनं रक्तं ॥ ६ ॥ अथ वृश्चिकः तिष्यथा
नगानामस्ति ॥ ७ ॥ अथ वृश्चिकः तिष्यथा

२५

गदया ॥ ८ ॥ हस्तः सप्तमिकः गतः ॥ ९ ॥ तिष्ठति वृश्चिकः सदनं रक्तं

दि २

• हस्तः वृश्चिकः जनसमाख्यः ॥ १ ॥ अथ वृश्चिकः तिष्यथा
याः पाकानां वनहस्तः सालः ॥ २ ॥ अथ वृश्चिकः तिष्यथा
हस्तः सप्तमिकः गतः ॥ ३ ॥ तिष्ठति वृश्चिकः सदनं रक्तं

कृष्णं वृषक ११ वली कनीषेय दल प्राक्त ३ थ य दलं कृदि ११॥ पानसी रु वजुली द्वादन वक्र दानु हिर क पात पालिका यानु वि
 टंकं पुनं पुंसकं ११ द्वादी नं पुनी दान ११ स्यात्
 दानिय द्वादि न दवल सिन्न थ रि वृ क पाट
 ह्यधिनादि ही ११ समा ऊ नी क्षा ध नी स्यात्
 समो सव स थं गु म नो व क्षा रु वी रु व क्रिया ११ गु म ना क ड य क्षा लं स्यात् ११ सी म सी म क्रिया मरु ११ धा व मारी न य ली स्यात् एक

च यो २१॥

क

११११ व नाल य १॥ १॥ पुन व र्म १॥ १॥ म क्षा धा वि ख नि आ ह द क्षा र्थ ध न य र्वा ११ अ डि (ग) १॥ मि रि (ग) १॥
 व ल ले लु गि लो ला काला क म्ब द्वा उ छि कूट छि क कू ल मो ११ अ ल रु व न म क्षा ह द्द य म पु र्व य व र्ति ११ हि म वा
 निष धा वि (ध) माल्य वाना नि पा न क ११ स क्षा म ल य म र्ने क ११ के ला स ११ सान्मान पि ११ को क्षि म दि न रू ११ न ११ कि
 गु का वि रु (ह) व न ११ गंध मा द न म न्ध व द म कू टा द यान म ११ पा वा ण पु रु न न वा य ला क्ष्मान ११ हिला दु य न
 कू टा ली नि य ने गं ११ प्र पा त ह्य त टा ह गु ११ क ट का ली नि ग धा द ११ मू र य ह ११ सान् न रु थि यो ११ उ त्तर ११ य म व र्ण वा नि प्र वा स नि म

भासन ॥ दनी रुकन्दना वासुदी. दवत्वा तविल गुहा गहनं गह्वर (होला मु. अगा १ सुलाय लागिन १॥ धनि १ क्रिया माक न १ स्या
 न. पादा १ यत्क यव ता १ उ यत्का ड ना स ना. रुमि नृ १ मधिय का ॥ धा रु म न १ गिला य ड. यो नि क रु वि (हा घ न १
 नि कं १ वा की व ल ता दि यि दि ना द न ॥ ॥ ॥ ॥ होल वर्ग १॥ ॥ अट य न १ वि यि नं ग द न १ २०
 का न न व न १ म हा न १ म न १ म न १ नी. गृ हा ना मा रु नि ष्कु टा ॥ आ ना म स्या दू प व नं. रु मि न च न म व य न ॥ अ मा य ग हा नि का
 ग हा. य व न व रु वा टि का ॥ य मा ना की रु ड या नं. ना रु १ सा धा न १ व नं ॥ स्या द ग द व य म द. व न म क १ पू ना वि गं ॥ वी थ्या लि ना

कुंजो ३

पूषा विदल हा ग वा नी न वं रु ला १ धो य नि वा धा वि धू लो. ना द यी वा म्ब व न स ॥ सो रां ज नं नि गृ १ गी हा. ग म्ब का की व मा व का १ न
 का सो म धू हि ग र स्या. द नि ष्कु ट नि ल १ म मो र वि ल्व हा डि ल्य (हो लू धो. म लू न १ रु ला व यि ॥ पु का ज टी प क टी
 स्या न. न्य (मा धा व रु या द ट १ गाल व १ सा व ना ला ध. मि नी ट रि ल मा रु नो ॥ आ म ग्भू गा न सा ला सो. स रु का ना नि
 सो न रु १ क रु ल व ल क की व. को हि का गु गु ल १ य न १ ॥ हो लू १ ॥ मी न क १ हा ग. उ द ला व रु वा न क १ ना
 जा द नं पि या ल १ स्या न. स न क रु न १ य ट १ ॥ ग म्ब नी स र्व ना रु डा. का इ म नी म धू प रु का १ यो प रु रु ड प रु व. का इ म यो

मयाविहवदिन. कदन४वदिनसितासामवल्कायथयाद्य. पूरुगचर्वदसकोभनछुडनूकश्चनूकश्चिउकश्चस४॥
 वंचू४यंवांगुलामहु. वडमानयउंयका४ ॥ १ ॥ जूल्यांहीमीन४स्याहमीहकुहलाहिवायायिछीनकामनूवक४६॥
 सन४कनहाउक४१हाल्यह्यमनहाक. पादय४यानिरुडक४१रुडदानूईकिलिमं. पीतदानूवदानूव॥ पूरि ३१
 काष्ठं वसफसू. ईवदानूश्चथद्यथा४॥ पाटलि४याटलामाघा. काचकुलीरुलनूहा॥ कुरुवकाकवनाकी. ह्य
 माउमहिलाकया॥ लतागा वन्दगुडा. प्रियंगु४रुलिनीरुली॥ विकश्चनागचरुलीकानंशाप्रियकचूसा॥ महुकपक्ष

पनार्हन्नदकंदंगदूका४१॥ ह्यनाकहुकनासर्क. दीर्घवृककूटन४१॥ हतहाकश्चनलोतिथ. रुलावामलकीशिषा॥ जू
 मृगाववयस्कव. शिलिगस्तुविहीनक४१॥ जू कमुष४कर्वरुलारुगवास४कलिङ्ग४१॥ जूरुयावयथायथाव
 यस्तुपूतना३मृगा॥ रुनीनकीसमवनी. च गकी॥ यसीहिवायायीक४१सनल४पूति. काष्ठं वाथ४मायल४॥
 कर्हि कान४यनिशा॥ धालकवालिकुवाग४१॥ यनस४कनकिरुलानिचूलाचू४१॥ कपिलारुसगर्गसाः
 हिनीषकुकापीन४१॥ रुलिनायथवाभय. चमकाहमपूथक४१॥ यतस्यकलिकागचरुलीस्यादथंकहान॥ वकूलावंश
 रकाकोइमलिकारुलुमल४१॥ धने४१॥ अजिहःसर्वगाहडहिंगुनिर्याममालकाः पिबूमर्दमनिधेयपिष्टिगुगुकिहपा२

लाशहाकसमोकवकदाविमो॥वाम्यय१कसमानागकहव१कांचनाकय१उयाऊयकीरकीनीनादयीवेऊयकिका॥
 हायधुमनिमक१स्याकहिंकागहिकाजिका ऊयाथकूडज१हाकावसकागिनिमलिकारायतस्येवकलिंमदय
 वरयवंहलाककयाकहलाविमसूषला १कनमदक१कालकधरुमालस्याहापिठयथसिद्धक१सिं ३२
 न्दवान्दसुनिमोनिगुंछीलाहिकलयाया वहीत्वनागनीदवगाशजीमूगल्लययिसिद्धिनीउरुवृष्टी
 हहासेन्यकुमलिका॥रूपदीहागरीनृधसेवाहगावनाहवागहलिकारुसुवदानिगुंछीनीलिकावसा॥सिता

२१३

सोह्यतसूनसाहनवधयसागधीगहिकायथिकाचहासापीगाहमयथिका॥जुतिमक१यलुक१स्यावासनीमाधवं
 लतासूननामालतीजाति१सफलानवता लिका॥माथंकुन्दनकककुवचूकावचूजीवक१सहाकमानागी
 बहिब्रह्मानकुमदासहा॥गगहोंकुनूव ककुलुगपीककुनूवक१नीलासिन्धीदथावाहोदासीवारुगल
 ग्वसासेनयककुमिन्धीस्यालुमिंकुनूव कानूहमपीगाकुनूवकामिन्धीगसिसहवनीदथा१डाडुपूयंक
 वापूयवकापूयंतिलस्ययगायतिहासहागयासवहुगहयमानका१कनवीनेकवीनपुककनगकिलापूशोडम

रुधिरवाधूली धूलनः कनकाक्षयः मातुलामदन आस्य रुलमातुलपूरकः रुलपूनावीजपूव नूवकामातुलंगक ॥
 समीवांक्षमनूवकः यस्तु यस्तु रुनिष्क कः ॥ रुचीनायधपुष्पः कठिञ्जक ॥ ० नकोसिगर्जकायपाठि वि
 रुकावक्रिसंरुधः ॥ १ जूका कवसूकासूग गन ॥ नूपदिवीनक्षाम ॥ २ नक्ष ॥ कौपल्लुगुहक ॥ ३ लर्कप्रगायसी ॥ ३३
 हिवमल्ली पाण्डुपग ॥ ४ काशीलोवकावसू ॥ रुन्दावकादनीवृक ॥ ५ रुहाजीवकिकयपि ॥ ६ वत्सादनीचिन्न ॥ ७ रुहागु
 रुचीगलि काश्मरजीवकिकासामवली ॥ विहाल्यामधूपक्षिपि ॥ ८ मूर्धादवीमधूनसा ॥ ९ मानटा ॥ १० रुनी ॥ ११ रुया ॥ १२ मधूलिका

धनः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 का ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 रुनापावृष्यली ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

विहसि

रमंजिवाविकसाजिनी. समझा कालमधिकारमधु कपली

कृष्णक १ कं १११ कं १११ नादिनी कदना

लिका। का सुविनासिंदु पृच्छी कलसिर्वाः

नी कली रुजा. दूषणा नादिक कल्पिनीली

वनीलिनी। अचलुज ११ सामनाजी सुवर्त्ति ११ सामवल्लिका। कालमधीक सुहला. वागुजीयतिरुत्यपि। दृष्टप कल्या वेददी. माग

रुणीयाउनपल्लीपि। यासाय वासादृषा (गोधनूर्यास)

इनकासमडा कादनालशा। पृष्णिपल्ली पृथक्कु विरुपल्ली चिव

वनिर्गदा। निदिग्धिकाए गीयाडी. वृहती कल कात्रिका। यवाद ३४

कालाक्रीनकिका। गमीनामधूपल्ली का। नऊनीयीरुलीकुल. रुणीयाला

धीवपलाकणा। उषणापियली (गोली. कालाश्चकनिपियली। कपिवल्ली कालवल्ली। अयसी वाहिन ११ यमान्। वयनुववि

कं काक. चिक्की गुच्छु रुहल्ला। पलंकवालि

ह्यपि। विष्वा विषापतिविषा. विषाववि

रीनुविन्दी वनीवनी. अघापाका ११ नीनुपल्ली

वचवादा नूहविजापल्ली नीह्यपि। वचागगचा वञ्जुला (गालासी) गपर्विका। हुक्काहेमवनीवेश. माहसिक्का रुवासका। पृष्ठा ३८ नू

रुगन्ना. अयद सुखादुकलक १। (गोकलका) गम रुवका. वन ११ रु ११

आनूला। ११ रु ११ मदी बधर्कथिदी नावीइग्धिकसम। ११ रु ११ वरुसुता ३

नावाय ११ रु ११ गावनी। अरुनूनधपीरुड. कालयक हविडव ११ दावीप

षष्ठसिंहास्या. वासका वाजिदचक ४१ आसृतागिनि कर्षीस्या. विष्णुकाका इव नाजिगा ॥ ४२ गन्धका ४३ का किला दक्ष नक्ष ४४
 लय ४५ न्यादी कलि व. मृगमधुनिकामिसी ॥ मिश्रया ३५ थसी कुल्ल. वज्र ४६ मृकल्लदी गुजा १ समक दद्यात्थ वल्ल ममा वाचिग ४७
 ला १ कदु नश्च कसि घृथ. विठंगम्यं नयंसकं ॥ वालावाद्याल का घल्ल. नवातु हान पथिका १ मुडिका १ गारु नीडा का. ला दी मधुन ३५
 सगिवा सर्वान् रूति ४ सूवहा. छिपूग जि वृगा छि वृग १ छि रू छि नवन ४७ मा. पालि ४८ सूषणि का १ काला मयूत्र विर्लाई वला का
 लमयिका १ मधुकं क्रीकं कं यस्मि. मधुकामध्यसिका ॥ विदानि की नक्षु कक्ष. गन्धका ४९ चया सिगा १ ज्यादी न विदानि स्या. महा ४९ गार्द

गन्धिका लङ्गली नदी नाय, पिथली नदी कलादनी ॥ खनाब्बा कानवी दीया, मयूनाला वमरु क४ ॥ गायी नदी नाया निवाया, दनका ल
लङ्गानि वा ॥ याग्र मृच्चि १ सिद्धिलम्को, व
शीलामृजपल्ली, काकमृजसदल्यः
नाला, सुगन्धगन्धनाकली, नकुलल
सिनाधुवा, रुद्रिकनी समुदा ना, कर्पासी वदनटिव, शनदाजी रुसावना, ६५ श्री रुद्र पलावृष ॥ गंगानदी ना

[illegible]

नूकी नागवला, सषादसुगवधुका। धामार्गवाधाकेवकस्या, सहाजालीसयीरक॥ अस्त्रीपटलिकाजाली, नादयी
 रुमिजचुका। स्यालांगलिकगिनिहिल
 का। अंजुष्टजीविषाणीस्या, (र्जजिजादा
 लुकाकोनी, कपिलारुसगचनीउल
 मंदकमन्दू, हांविनांधोत्रपुष्पीस्याक्कीन्यथविठुनक॥ सादाइमलाइजाटाताली, छिवातामलकीटिव॥
 वालंजीवितवहिरेरियकेमचूतामव॥ कालानूसार्यवृद्धाभ्युपसीगछिवातिगुलेलयंगलयकीनुदेत्यागभकूनी
 मूना॥ मंधिनीगजएकानुस्वदाहयहीजसा॥ महजभकून्दूकीअहकीछादिनीतिच॥ अभिजातामुनिदेउ

वत्सुष्टिका॥ पृथक्निबन्धो

यथोक्तं नृकंपूर्णं मथ कुत्र ४ कवनक ४ कवि ४ कद्व ४ काकलेका नदी वृक्षाथनादसी । वल्लभनदनीकम दधुजग
 ललासका ४ बाधायुधं बाधनखं क नंजकुका नकां सुषिवाविदं सलता कपागांघ्रिर्नदीनलीध
 मयज्जनकहाव हनूददविलासिनी । हुकि ४ हांख ४ क्षुन ४ कालदलं नखमथादकी । कासीमृत्ताहुवनि
 का मृगानेकसूनाखजा । कुटनदंदहा पूनं वानयं पनिधलवं । प्रवागपूनगानद केवलीमृत्काति
 वागमिपल्लुं हुकं वरि ४ पूयं स्तेनयक कुन । मनुलालाहुपिहुना पृक्कादवीलगालघ्वा समुत्तान वंधू ४ का

टी. वर्षालंकापिकल्पिगपस्विनीजदामांसीजटिलालामहामिषि। सुकर्मं गंतव्यं वं वनाङ्गकं। कर्तुं नकायावि
 लंककाल्यकावधमत्वाक४। डाषाध्याजा। रिमलस्य वजागोसर्वमोषधं। शाकाद्यं पश्ययादि। गह्वरीयाः
 ल्यमानिव४। विहाल्यानिहिखानका। स्तुति नीहाकृष्यापि। स्यादृकगन्वाष्टगला। स्थावगीवृद्धदानूक४। शृङ्गाः ३॥
 वाक्कीरुमस्याकीवयस्यसामवल्लनी। यः दृपष्टीर्हमवती। सुहृदीनीहिमावती। हयवृद्धी। लुकाश्वाजी। साध
 पष्टीमहासहा। तुष्टिकनीनकहला। विधिकापी। लयष्टीपि। वर्वनाकवनी। तुङ्गी। खनय्या। जगन्धिका। पला

× विमलासागला × ३

पष्टीदुसूवहा। नालीयूकनसावसा। र्विनी वृद्धिकादक। हा। मस्यमूलाहिका। सदसवधीवृक्षाश्च। वरस४। गतव
 ध्यापि। नमस्कात्रीगुलुकाली। समस्तद्वि दिनीत्यपि। जीवनीजीवतीजीवा। जीवानीयामधूचसा।। कूर्चणी
 धर्मधूनक४। रुद्रस्वाङ्गीवका। कि नागतिकारु। निम्बा३। नार्थातिकथसकला। र्हरिहरनाचर्मक। हा।
 त्यापि। वायसालीखादूनसा। वनस्तथ मूलक४। निरुद्धादिकेकायस्य। कुम्भदूधनयष्टीपि। मूजमादाः
 तुगगन्वा। वस्तुदर्शयमानिका। मूलवृक्षनका। ह्रीं न। यमयगाहियोक्ता। जूवथातिवनयया। चानदीयमवानिही।।

कामिल्यः कर्कः ६॥ अथा. नका. ज्ञा. भा. वनी. थपि. पय. ना. उ. खा. उ. गजा. द. द. घ. अ. क. म. र्द. क. ४॥ य. मा. ट. उ. न. ल. ख. वे. प. ला. उ.
 कु. म्. क. द. क. ४॥ ल. गा. र्क. दू. द. मो. त. ग. ह. नि. ग. थ. म. शो. ष. ध. ॥ ल. ह. न. न. ग. उ. न. ना. नि. ष. म. हा. य. द. न. सा. न. का. ४॥ य. न. न.
 वा. रु. (६॥ थ. घी. वि. रु. न. म. नि. ष. र्द. क. ॥ थ. वा. न. क. ४॥ ग. ला. इ. य. ना. जि. ता. हा. न. व. ल्छी. पि. ॥ या. ना. व. नां. धि. ४॥ क. ट. री. २६
 पि. ध्या. जा. ति. ष. नी. ल. ना. ॥ वा. र्ध. कं. जा. य. मा. हा. स्या. ला. य. की. व. ल. रु. डि. का. ॥ वि. ष. स. न. पि. चा. ग. र्छि. र्वा. ना. ही. व. द. न. थ.
 पि. ॥ मार्क. वा. रु. न. ना. उ. ४॥ ला. का. क. सा. वी. रु. वा. य. सी. ॥ हा. न. य. ध्या. हि. न. रु. गा. नि. रु. गा. म. ध. ना. मि. सि. ४॥ अ. वा. क्. षा. का. न. वा. व. सा. न. ल. उ.

प्र. सा. वि. ला. ग. ला. क. ट. रु. ना. ना. उ. व. ला. रु. द. व. ल. थ. पि. ॥ ऊ. नी. ऊ. रु. का. व. रु. ती. ऊ. रु. क. व. क. व. र्हि. ना. ॥ सं. स. र्ध. थ. स. टी. ग. ध. मू. ली. ष. म. र्क.
 क. थ. पि. ॥ क. र्क. ना. पि. य. ला. (६॥ पि. का. ल. व. ल. ४॥ णि. ल. क. ४॥ स. त्थ. वा. वा. थ. क. ल. कं. प. ट. ल. लि. क. क. ४॥ य. द. ४॥ क्. षा. रु. क. ४॥ रु. क.
 क. र्क. नि. र्वा. न. ४॥ क. र्क. टी. लि. यो. रा. ॥ का. क्. र्क. ४॥ अ. र्ध. घ. ४॥ न. ल. ४॥ क. द्या. ग. रु. नि. म. रु. स. म. सि.
 ला. ॥ क. ल. मू. थ. पि. का. मू. रु. मू. ल. कां. दि. ल. मा. चि. ना. ॥ वा. म्. कं. हा. क. रु. र्द. स्य. र्द. वा. रु.
 हा. न. य. र्धि. का. ॥ स. द. स. वी. र्था. र्ध. र्ध. वा. न. सा. न. का. थ. सा. सि. ना. ॥ ग. ला. मी. हा. न. वी. र्था. व. ग. रु. ली. हा. क्. ला. रु. क. ४॥ क्. न. वि. द्या. म. घ. ना. मा. मू. ला. म. रु. क. म.

शुभका कमुकाकोलादपूरुः कलकलु कः॥ आगपिहोदा दार्यगृधोकी लभूकीसभा॥ कुडकी रक्तथवकः कंकः पुष्पनाक्ष मुसाजसः कोकच
कृष्णक वाकोनथांगदयनामकः॥ कादम्बः कतहंसः स्यादलोका वृजोसभा॥ हंसपुष्पनगजगन्धकाः ज्ञानमानसोक्तः॥ गङ्गाहंसः सुगन्धवृक्ष

लोहाहिनी
नः मन्त्रिनेम
निका रज्जु
धारुनाहुति
नतजैः॥ अनि
नोटिजाति
वताकाविम
कालिका॥ हं
सस्यवीरिद

लविकुश्यालुसा सुचटकागया॥ यमयथवाटके नक्षत्रायथवटके वदि॥ कर्कनदृष्टकनदृष्ट्याग ककलककनोस
मो॥ वनप्रिय॥ कनरुक्क॥ काकिल॥ यिक॥ लयि॥ काकुकुक्कनटाविष्ट वलियुष्टसकल्यजा॥ धांकासधाधयनरु
न वलिरुक्कायसाजुपि॥ डाहवर्थावकलयालिका॥ कन्याकुमानी॥ गोत्रीकु नग्निका॥ नागनाक वास्या नमधमादृष्टन
जाह्नवी यवकि॥ सम॥ समा॥ सुषाडनी वध्विनिष्टी रुक्मवासिनी॥ द्वावती कामकासा दृष्टस्य कीदुका मकी॥
काकार्थिनादुसागानि संकरं सारिसानिका॥ यंष्टलीधर्षीदावध्वक संगिकलटखनी॥ सेविद्या यांहुलावस्या
द्वि॥ नसस्यलुलक्ष्मि॥ रुक्मकिनपरास्यालनी धूजेलपायिका॥ वर्धक्षमकि कानीताम नमैधो धूमकि नपकि कापूति स्या
मकि का॥ दंभीगङ्गागिनत्यास्या दंक्षली वनदृष्टाः॥ अस्मी नीमीनुका॥ ची

४१

दंभीमुवन

दक्षिणीहिनु नादिना॥ अवीनानिश्चकि सुगा विह्वलाविधवसम॥ जालि॥ सखीवयस्याव पणियली सरुह का वृक्षा
पलिक्रीयाहूडुपलायाहूडुधीमनी॥ हूडी हूडुस्यरा शीस्या द्वाक जागिनवव॥ जूही नीकु मदाहूडी जागियं याग
याः समा॥ आर्याहीस्वयमर्थोसा न कति यादुगिया ह्ययि॥ उया आ यायूयाध्यायी स्यादा वार्यायिव स्वत॥ आ
वार्याहीडुयं याग स्यादर्थी कति यीनथा॥ उया आ यायूयाध्यायी योतासु यंसलक्ष्म॥ वीनपली वीनरार्थी वीनमाता
कुवीनस॥ जागा यस्यायजागाव पुसगावयसुकि का॥ मुनिग्निका काटवीस्या दूगी संवा निवसम॥ कात्यायनार्धवृक्ष

याकावावसनाववा॥सेनंधीयनववमस्तुस्वववमस्तुल्यकाविका॥अहिक्रास्यादवृक्षायाप्रथाक॥यनवाविनी॥वानसुग
 सिकाववमस्तुप्राजावाथसाऊने॥सक्तुगावावमस्तुसाकृदनीसक्तुलीसम॥विषद्विकालीकालिकादेवस्तुथनऊस्तु
 ला॥मूर्ध्निर्मिस्तुवीनरुयीमलिनीपुष्पावस्तु॥यि॥पुस्तुमस्तुपुदकाथस्तु॥उऊ॥पुष्पामारुवंग॥हस्तुस्तुद्विस्तुदवनी॥४२
 निरुहलाविकतारुवा॥आयनसलास्तु॥हृद्विस्तुकर्वलीवगर्हिनी॥गहिकादस्तुगहिका॥गहिकादस्तुगहिका॥गहिकादस्तुगहिका॥
 नरुद्विस्तुवृष्टाद्विस्तुस्तुद्विस्तुपुष्टि॥सक्तुद्विजागुद्विस्तुपुष्टि॥सेवयस्तुद्विस्तुचिनी॥कानीन॥कनीकाऊ

त॥सुताथस्तुगस्तु॥सोरागिनय॥स्तु॥यानस्तु॥हस्तुयनस्तु॥॥येहस्तुय॥स्तु॥नयेहस्तुय॥स्तु॥यनय॥स्तु॥यनय॥स्तु॥
 ॥सुताथस्तुगस्तु॥सोरागिनय॥स्तु॥यानस्तु॥हस्तुयनस्तु॥॥येहस्तुय॥स्तु॥नयेहस्तुय॥स्तु॥यनय॥स्तु॥यनय॥स्तु॥
 कृकीरुसनीयदि॥गदाकोलटिनयास्तु॥को॥लटथापिवास्तु॥॥आस्तु॥स्तु॥नय॥स्तु॥न॥स्तु॥पु॥स्तु॥स्तु॥
 ॥आस्तु॥स्तु॥नय॥स्तु॥न॥स्तु॥पु॥स्तु॥स्तु॥
 नास्तु॥नना॥दास्तु॥स्तु॥न॥स्तु॥पु॥स्तु॥स्तु॥

नाजी (ह्रस्व) न व न पि । वर्षी या द ह मी क या न् । पूर्व ज ह गि या इ गु ज ॥ ऊ च न ऊ स्य ॥ क नि ष्ठ य वी या इ व न जा इ नू जा
 ॥ अ मां सा इ व ल म्भ ना व ल वा मां हा ली इ स ल ॥ रु न्दि क मु दी व द कू कि ॥ पि वि ष्ठि ल ॥ अ व टी दा इ व ट थ
 व रु ठा न ग ना सि का । क हा व ॥ क हा क ॥ क हा व लि ना व लि रु ॥ स मी । वि क ला रु सु या ग लु ॥ ख र्वा ऊ ख र्वा ॥ ४४
 वा म न ॥ ख व ह ॥ स्या ग ख व ह सा वि ग मु ग न ना सि क ॥ ख व ह ॥ स्या ग ख व ह स ॥ य हं य ग न जानू क ॥ ३
 इ हू नू र्ज जानू ॥ स्या ग् सं हू ॥ सं द ग जानू क ॥ ॥ स्या द उ व धि न ॥ कू कू ग हू ल ॥ कू क न कू हि ॥ ॥ ए ष्ठि न स्य ग

नो (ह्रस्व) हा ॥ य (ह्रस्व) म हू मु हू ण । व लि न ॥ क क न खा रु ख ऊ सि वू रु ना व ना ॥ ऊ इ ल ॥ का ल क ॥ पि प्र सिल क
 सिल का ल क ॥ अ नाम यं स्या दा ना गं । वि कि त्सा नू क प रि कि या । रा ख ऊ व ध र्वा य क्ता न ग दा जा य वि ल पि । मु नू
 रु जा वा य ना य ना ग वा वि ग दा म या ॥ ॥ क य ॥ (ह्रस्व) य क्ता व प रि ष्ठा य मु पी न हा ॥ ॥ कू कू ग र्ग क
 व ॥ पं सिं का स मु क व थू ॥ य मा न ॥ (ह्रस्व) रु मु ह्व य थू ॥ (ह्रस्व) थ ॥ पा द स्तु दा वि पा दि का । कि ला सं सि धा क हं तु या म पा
 मा वि व र्चि का ॥ क हू ॥ ख र्वा क हू या । वि स्तु ट ॥ वि ट क मि ष्ठ । व (ह्रस्व) सि या मी म स नू ॥ क्री व ना जी व ह ॥ य मा न ॥ का

(७) मल्लुकककुं विवदनामकार्हासी अनादुरुविद्वन्धरायागुगुहनी नृकपवाहिका ॥ पृष्ठदिक्कावमिह्वस्त्री यमांमु
 नमथुसमा ४ ॥ व्याधिरुदाविडविष्की कनमदुरुगदना ॥ अहमनीमूयककुं स्यात् पूर्वद्युकावाधमिष्वागनागहायगदंका
 नाशिरुवेद्यमिस्कावालीनिनामय ४ क • ल्यउल्लाधातिर्गतागदात् ॥ स्नानस्नान्मयावी विककाव्याधिराय ४८
 हः ॥ अथुनात्यमिगात्याकः समोयामनककुं नो ॥ दुरुनागी स्यादहो नागधनाईसः ॥ नागकीवाननागी स्यात् सानि साधानि सा
 नकी ॥ स्मः किन्नाकवृत्तविलयिलाः किन्नरिवायमी ॥ उन्नरुउन्नादवनि ॥ (६) मलः (६) मलः कही ॥ नृका शुभ्रवजावृद्धनारे

उदितुलुहिलो ॥ किलासीसिधमलास्मदुर्गुल मरुमद्विनो ॥ कुं गजावनसीव वीजवीर्यादियाधिव ॥ मायः पिरुंकरुः (६) मलः सि
 यारुल्लगमग्धना ॥ पिशिनं नवलमांसं यललंकवामिषी ॥ उरुयंकुमांसं स्यात् रुद्रल्ललंजिलिहकं ॥ अधि वरुसएलादिकामनकक
 गजा (६) मलः ॥ वृकागमांसं ददयं दन्मदमुव • यावसा ॥ यग्धाजीवाहिनमया नाडी रुधमनि ४ हिनानिलकं काममसि
 कं (६) मलः किदं मलाखियां अकुं यदी नंगुल्लदी स्यात् स्यथवससा ॥ मायः स्रियांकालखुं यरुगीतु समरुमा सहिकास्यदिनी
 लाला इषिकानगया मेलं ॥ मय्युमावडवाना वस्त्रोहमलं हाकना यदीयंगथं ववक मस्तिविष्टविष्टोस्रियो ॥ स्यात्कथं न

॥ कया लालि की क संकल्प मस्ति वा स्यात् न नी वास्ति क कालः यथा स्ति तु क (हा न का ॥ छि ना स्ति नि क ना टिः स्ति वा र्ध्व स्ति नि तु यर्ध
 का ॥ अक्ष प्रतिका वय वा यद्य ना थ क ल व ना ॥ ग म तु म यः सं द न नं हा नी नं व र्ध वि ग रः का था द रः स्ती व यं साः स्ति या म र्दि
 स्त न स्त नः ॥ या दा गं य य दं या दः य दं शि श्व न ॥ (ह म स्ति यां ग दु स्ती घ टि क गु ल्से य मा नू या स्ति न ध रु या शा र्जं चा तु य स ४६
 ना जानू न य र्ध स्ती व द स्ति यां हा कि स्ती व य मा नू नू स्त स चिः य सि वं क णः ॥ गु द ह्वा नं या य र्ना व स्ति र्ना र्ज न (ध द या
 शा क ण ना (ह म वि रु ल कं क टिः (ह म विः क कृ द्म नी ॥ य व्म नि न म्बः स्ति क द्याः स्ती व तु उ द नं य नः कृ य को तु नि न म्ब स्ति

द य स्ती न कृ कृ न्द ना स्ति यां स्ति वो क टी या था व य स्त व द्म मा त या श र गं या नि द याः वि (ह म म रु न (हा रु सी ॥
 म र्का इ लु का वा व य नः य र्ध वं ह म ध न रि का पि वि लु कृ द्म ज ० ना द न रु न्द कृ वो रु नो ॥ वृ व क रु कृ वा गं स्या न ना
 का र्जं तु जा न्द ना उ ना व त्स्ते व द्म कृ य र्ध लु व न म न ना शा स्त (ध रु न वि नां इ सा स्ति स म्बी न स्ते व ज कृ द्म ॥ वा द्म
 म ल उ लो क को या र्ध्व म स्ति न या न ध शा म ध्व म क्क व ल ग्म न म (ध म स्ती वो य नो द याः श रु ज वा रु य व र्ध याः स्या
 क रु हा वि सु कृ र्ध न शा अ स्या य नि यु ग लुः स्या न् यु का र्ध रु स्य वा य धः म वि वा न्ध या क नि र्ध क न स्य क व र्ध

वरिष्ठा यश्चैहमखः हायः पादि. सुर्जनी स्यात् पुदहिनी॥ अङ्गुलः कनहमखाः स्युः यं स्यं सुखः पुदहिनी॥ मध्य
 मानामिका वापि कनिष्ठा वमि नाः कुमाना यूनर्हवः कननक्षानखाः स्त्री नखना स्रियो॥ पादहातल (मकह्म. सु
 र्जनादियुग नना अङ्गुल स्रक निष्ठा. दि. गसिर्दो दहमकुलः पा (हो वय टं पनलं. पुदहा विरुगा कुलो दो संद ४१
 गो संदगल. पुगलो वामदक्षिणे॥ पादि निःकृदुः य सन. सो यगा वरुलिय माना यकाश्चा वि सन कवा. दहमा मखा
 पुवक्षया॥ सनलिः स्याद नलि सु. निष्कनिष्ठ नमस्त्रिना व्यामा वाकाः सकनया. सुगया स्रिय गनना॥ उर्ध्व विरुग दाया

ति. न मानयो नृवंशिष्ठा क (ह्म गला थगो वायां. हिनाधिः कन्य दययिमा कस्युगो वागिल स्वासा. वद्वर्धो गारुकाटिका. वक्रा
 स्यवदनं गुलु. माननं लयनं मखा॥ क्रीवद्या हांग चवहा. द्या हाता सा वनासिका. पासाध जो पुवदन. वृक्षो दहान वासुसि॥
 अधः स्याच्चि वृकंग (ह्म. कया लो ग सवाहनः. वदना दहाना दना. वदा स्याल युका कुं॥ वसह्म वसना जिहा. यान्मा वा स
 स्रस्र कृष्णा. ललाट मलिकं (माधि. वृक्ष दय्यां सुवो स्रियो॥ कर्ष मसि कुवा र्मा (ध. गावका रुष्कनीनिका. लावनं नयनं न
 न. मोक्ष हां वद्वर्धन द्दिहा॥ दमृष्टी वा इत नगाम्. वादनं वा सु मस्रवा अया (जो न गुया वनो. कटाक्षा या रुदर्धना॥ कर्ष हाव

गुरुः (होमं) अग्निः सुगन्धवर्णवश उ ह मां हि वं हि र्षं मूर्धना मस्तकाभिर्यां विक्वः कुंगलावालः कवः कदाः हि
 नानुदः गुरुः के हि कं के हम् मलकाश्च कलाः गललाठ्यमनकाः काकयदः हिरवुकः कवनी कदा वै हम्
 थ, धर्मिलः संयगाः कवाः हि स्वावृणकदा या हा, वगिन सुजटा सदा वदिः यवदा हा र्ष ध, हि यस्यो विषय क
 वा या हाः यदश्च रुमश्च कलायार्थाः कवायना ननूदं नामलास, गद्वी हा ह्यं मखा आकल्पवा हो नयथं यनि
 कर्म यसा धनां द हो ग विषय लंकर्, इल रु निष्कृष्ट म लुनः यसा धिना लरुगश्च यनि स्तुगः विजाट् जा जिष्वा विष्कृ

४८

वातु स्यादलं क्रिया अलका नस्तु नदां यनि स्तु वा विरुषदां मलुनक्षथ मकुटं कि वा टं पं न पं सकं वृज मदिः हि वा
 लं ननला हा न मध्य गः वाल याश्च या वि न था यगु या ह्म ललाटिका कर्षिका गाल यगं स्यात् कु लं कर्षव सूनां गेव
 यकं कर्षु र्वा ल म्य नं स्या ललनिका स्यात् यालमिका (थ नः स्रुिका मो कि केः रु गः हा मा म्का वली द व रु द्याः सो
 हा ग यति का हा न र दा य र्द हा गुट्ट गुट्टा इ (ग म रु ना श अर्च हा ना मा हा व क् ए का व ल्य क य र्दिका से व न रु ग माला स्या
 न् सफ विं हा नि मो कि केः आ वा य कः या नि हा र्मः कट कं व ल या क्रियां कय न म रु दं तु ल्य अरु ली य क र्म मिका सा रु

नाहुलिम्डास्याम् ककुटांकनरुवहां॥ फीकल्यां भवलाकासीस्यकीवहानागथा। जीवसावसनकथं. यंक घांष्टु र्वलं
छिषू॥ यादांगदं तुलाकाटिर्मञ्जरी नृपुत्राणि यां हंसः पादकटककिं किनी कूडघण्टिका॥ लुकुहलकमिनामादि. व
मुयानिर्द्वेष्टाछिषू। वाल्कंकोमादिहलंतु. कार्यासंवादवक्रगत॥ कोषयंकमिकावाथं. नाहुवंमगनामऊं॥ अ ४७
नाहुगंनिष्ठवालि. कलुककनवाचव॥ तस्यादृष्टमनीयं य. होगयावेमुथार्यगपणार्थु। धनकोषयं. वहुमूल्यंमहाधं
नं॥ कोमन्दकूलंस्यादृष्टु. निवीगं पावृगंछिषू। छियाचहलवमुस्य. दक्षास्यवेमुथाद्यया॥ देव्यमायासआनादृष्ट

विहाराविहाराणां पतत्रंजीर्णवसुं. समोनकुककथं॥ वसुमादुदतंवास। अलंबसनमंष्टुकं। सुवलक४यटासीस्यादृ
नाहि४सूलक्षटक॥ निवाल४ष्टदयट४सु मोवलककधलो। अरुनीयायसंयान. पनिधन्याधुहुक॥ दोयावाव
रुवासं। मो. समोवृत्तिकागथा। सन्धानमूल नीयं व. वाल४कृथासुक४छिया४॥ मीजात्र४स्यावनाह। दिमानि
लवानाह। अर्द्धावृकंदवलीक्षां. स्याच्चक्षुटकमंष्टुकस्या। छिषू। ययदीनं गग. पात्राया. ययदंदिषु। अर्द्धाविमानमूल
वा. दृथायं वसु वलमनि॥ पतिसीवाजमनिकास्या। छिन्तकवलीवसा। पनिकेर्माऊं संख्यात्र४स्यामाछिर्माऊं नामृऊं। उ

दहनासादनद समजासावजावद॥ स्नानं वच्चि वच्चि सं सुसकाथय बाधनं ॥ अनवाध ४ यलखा. पणहुलिनिम
 सम। तमालपठगिलक. विरुका निवि (हावकं) ॥ द्वितीयं वरुनीय चर. नमु यामथ कंकमं। काहमी नऊ मागिहि ख. व
 नवाही कपीतनं ॥ वक सक्का वपि ह्युत. धी वलादिग वन्दनं ॥ वाकाला काऊरुही व. यावालका दु. मामय ४ ॥ लव ५०
 नंदवक सुमं. शा संरु मथ जाय कं। कालीयक चर कालान्. सार्थश्च स मर्थकं ॥ वांहाका गुवना जा ह. लादकि मिऊजा
 रुकं। काला गुर्वगुन्या रु मंग ल्या मलिग श्रियत् ॥ यक धूप ४ सऊ नसा. नाल सर्ववसा वपि। वरु नूपा यथ वृक. धूप

कृतिम धूपको ॥ वरु ४ पिह क ४ सिक्का. यावना यथ या य स ४ ॥ श्री वासा वृक धूपा पि. शायि सु स न ल ड वो ॥ मृग ना रिर्नग
 म द ४ क रु नी वाथ का लकं। क काल कं का व रु ल. मथ क र्थ न म सु यां ॥ घन सा व च रु संरु ४ सि ता श हि म वा ल का। गन्ध सा
 वा म ल य ऊ रु ड शा व न ना मु यां। गेल व र्धु क (भा वार्थ. ह नि व न न म सु यां ॥ गिल य र्धु। रु प ण रु. वंरु नं व क व न नं ॥ क
 च न नं वा थ जा नी. का व जा नी रु ल स मा क र्थ ना गु व क सु नी. क को ले र्थ क म द स ४ ॥ गतान ल य नी व र्धु व र्धु कं स्या दि ल य नं। चू
 रु नि वा स या ग ४ ल. र्हा दि गं वा सि गं रि ष् ॥ संक्का ना ग न्ध मा ल्या थै. र्थ ४ स्या रु द धि वा स नं। मा ल्यं मा ला स ऊ मृ च्चि. क ह म (च रु

मर्क ४॥ पुत्रसूक्तं विखा लघि प्रान्तं संलला मकं ॥ पुत्रसूक्तं लघि स्यात् कष्टाश्चेककुरुत ॥ यर्हि यक् १ कफमूनसि
 विखा स्त्री पीठ ॥ विखा नो ॥ न वना स्यात्प्रतिष्ठि च आरुग १ यत्रियूर्ध्व ॥ उयधनं रूय धर्द १ विखा यां विय वगु ॥ वियनं मय्य
 यं क पल्या क्का १ खद्ययासमी १ ॥ ललु क ४ क दूका दीय १ यदीय १ यी ० मासतं ॥ समूजक १ सयुं टक १ पकिण १ द १ य ५१
 कजुद १ ॥ पुसाधनी क कृमिका पिशाच १ यदवा स क १ दय्य १ (हमक नाद १ हो १ यजनं गाल वृक कं ॥ ॥ नृवर्ग ॥
 ॥ सकृति १ (गुज नन कला न्य रि क ना न्वयो १ वं १ (ह न वा य १ सुकाना वल्लु स्युर्वा सक्ष द य १ ॥ राजवीजी बाज वं

॥ विखा वी अमुकल समु व १ म दाकल कली नार्थ सय समूज न साध व १ ॥ वक्त्याली गृही वान प्रसृ रिक्क वृ द सुय ॥ आ ह मा
 स्त्री द्विजात्य गु ज न म ह द व वा उ वा १ ॥ विषुव्य वा क्त (ह) शोष क र्मा या गा दि रि य र्ग १ ॥ विद्या न्वि पश्चि द्वा वरु १ स न स धी
 १ का विदा वृध १ ॥ धी नाम ना धी ह १ पा ह १ संख्या वान् पष्ठि १ क वि १ धी मान् सू वि १ क र्मा कृ क्षि र्ज व (ह) वि
 व क ल १ ॥ इ न द र्जी दी र्घ द र्जी (ह) उ य द्वा द सो स मो ॥ उ पा ध्या था १ ध्या य क स्या ग्स्या त्रिष का दि क नु व १ ॥ म नु वा र्वा कृ द
 वार्थ आ द श ल व न व नी १ य स व य ज मान च ॥ स सा म वा ति दी दि त १ ॥ १०० क्का वी ला या य ह का य क्का तु विधि न सु वान् ॥

स्यागिह ॥ यागदयसादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयता ॥ तस्मिन्नानार्थोऽथाग्नायी स्वाहावह तदुक्थिया ॥ अग्निमिध
 नीधाय च यास्यादग्निमिध्वन ॥ तायजीपमस्वं दद्याद्दद्याक वनूः प्रमान् ॥ अग्निं कासाष्टकाष्टया दीवसा दधिया
 गतः ॥ ध्रुवेऽं वृज नंतु य उदित मृग वर्मणा ॥ पृषदां सं दध्या अयनमानं तु पायसः ॥ दद्याक यदेव धेनुः ५२
 नयां सुवादि कां ध्रुवाय लक्ष्मिर्ननु सुवारुदा सुवः ॥ उपाक गः यद्युनसो यारुम सुक मोदतः ॥ यनं यः
 नाकं ह मनं प्राणं व वधार्थं कां वा शलिः ॥ यमी पाय सस्य नया किना दता सा नयं दवि नः ॥ ग्रीधुः हन क्रिषू वः

दृगं ॥ दीक्षा काऽवह ॥ आय लक्ष्मिर्ननु यदियं ॥ त्रिषथ कुरु कर्म सं पूर्णं स्वातादिकर्मणि ॥ अमृतं विद्यसा यल
 (हाषराज न हाषया १) त्यागा विहायि तं दान मस्तर्जन विमर्जन ॥ विज्ञा नं विन वहां स्यर्जन यगि पाद नो प्राद
 हा नं विवे यहा मय वर्जन मं सति ॥ मृगा र्थं दद दानं त्रिषु स्यादोर्ध्व दक्षि कां ॥ पिरु दानं निवापः ॥ द्वा इ
 त्कर्मणा मुक्तः ॥ अन्वा दार्य मासिकं ३ (हा सुभा ३ द्रु ४ कुरु पाश्र्वि यां ॥ यथ्य वहा प विधि म्या न्ववहा वग वः
 क्षा ॥ सनिस्त्व (अथ वहा या ३) रिहा रिथो वनार्थना ॥ षट्पु रिष्वर्थ मर्धो र्थ पा य म्या दाय वा विहा ॥ क मा दानि

आतिथयः अतिथ्यार्थं साधुनिः स्यादावहितक आगन्तव्यनिर्वाहस्तथा ॥ यज्ञानमस्या पवित्रिः समर्थो वर्द्धनः
 ॥ समाः ॥ यनिवस्था दुष्टुष्टु वा यनिवर्था यपासना ॥ वक्रायाया पर्थनं वर्था लीर्यायथास्तुतिः ॥ उपस्यर्हस्तुतिः
 मनःमथमोनमरावर्णः ॥ आनपूर्वस्त्रियां वादगु यनिपाटी जूनक्रमः ॥ यर्थाय आतिथ्या गच्छुः स्यात्वर्ययउपा ५४
 लयः ॥ नियमावकतस्ती नः वाववासादियुष्मकं ॥ उपवर्तुं रूपवामा विवकः ॥ यथा गत्सगा ॥ स्याद्वसावर्चसं वरु
 धयतर्द्धिवथा अलिः ॥ पा० वक्रा अलिः ॥ पा० विष्णुवावक्रा विन्दवः ॥ ध्यानयागसन्तवक्रा सन्तकृत्य विविधः

मोः मखः स्यात्प्रथमः कल्या नूकल्या सुगताधमः ॥ संस्क्रानपूर्वशदनं स्यादूपाकवर्धं ॥ समाः ॥ समुपादद्वलमरिः
 वादनमित्युक्तं ॥ रिदुः ॥ यनिवक्रा कर्मन्दी यानासर्थोयिमस्कवी ॥ गयस्त्रीतायसः ॥ पावि कांकी वाचंयमासनिः ॥ गवः कु
 हासुहायामा वरिुना वक्रवाविदः ॥ अवतः स ॥ यववसः स्नानकस्याप्लुनवनी ॥ यनिर्किमदियग्रामा यनिनायनय
 ष्ठगायः ॥ सुष्टिलवगवहमः ॥ सुग सुष्टिलवगवहमो ॥ सुष्टिलवमथविदुः ॥ सुमसः ॥ सुर्दयानिगमः ॥ यविदुः ॥ ययनः ॥ य
 नः पावः ॥ सुर्वलिनिनः ॥ यालाहादुआखाटा वगवाकमुवेनवः ॥ अलिकमउलः ॥ कुली वगिनामानैसेद्वी ॥

थिव आरुक् नृपदयमदीकिग ॥ वाजायुषाता (हय. सामक ४ स्या दधाव्वन ४१ वक्रवर्लीसावेलीमा. नृधान्याम
 लुव्वन ४॥ यनसंवाजसूर्यन. मल्ललस्यव्वन ४॥ अस्मि यथा ह्यावा ४१ ससमाउथवाजकं ॥ वाजनाक
 नृपगिद्विगियातांग (हय. सामक ४ स्या दधाव्वन ४१ वक्रवर्लीसावेलीमा. नृधान्याम ७७
 तुयनादिग ४॥ दधनिचयदानोतां. पादिदाका ददर्शको ॥ पतीदानदानपाल. दा ४१ ददर्शको ४॥ वक्रि
 र्मस्त्रीकस्त्र ३थाधकाधिद्वगोसमी ॥ सुयूका ३धिकाताम. गायामाभूरुनिष्. शोत्रिक ४ कनकाधका

नृयाधकसुनेषिकः ॥ अन्तःपुनसधिरुगः स्या दन्तर्वीहीकोजनः सोविदलाः कर्केकिनः स्यायत्याः सोविदाध
 ग ॥ वी १८८१ वववनसुत्याः सवकार्थनूजीविनः विषयानननानाजा. हाकर्मिगमनः यनां ॥ उदासीनः यनननः
 विष्णुसुपसुनः नियोवेनिसयलानि. दि. पदपदार्हदः ॥ दिष्टियकादिगामिग. दस्युगवंगवः ॥ अरिधा
 नियवागामि. यत्यर्थियनियकिनः ॥ वयस्यः सिग्धः सवया. अथमिगं सत्तासुहृत्. सस्यं साकयदीनं स्या. दन्ना
 इन्वरुनं ॥ यथार्हवर्धः यतिधि. नयसूर्यव्वनः स्या ॥ वावव्वगृह्यनृष. अकः यत्ययिनसिष् ॥ साम्बसनाको

निषिका, देवगुहाकावयासुर्मोहक मोहक, हानिकारुनिका अयि॥ नास्तिका हानसिद्धा न०, सती गृह्यः
नि० समो॥ लिपिक ना० कनवना, कनवृक्ष लखक॥ लिखिता कनसंस्कृत, लिखिलिपि नृसिथो॥ स्यात्सन्दहादनादु
ता, दूत्यकहावकर्मणी॥ अधुनीनाधन्य० या न० यथिक ०० ह्ययि॥ साम्यमात्ये० सुदतकाया, नाष्टदुर्गैवलानिवा॥ ना ७०
काज्ञानियुक्तय० यो नाक्षां (७) हाथायिव। संधि नाविष्टाहायान, मासनंदधमासुय०॥ यद्गुहा० हाकयसुसु०
पुशावासाहमनुजा० हाकय० हनकवृद्धिश्च, शिव (०) नीतिवादिनां॥ सपुकाय० पुशावश्च, यरुऊ० कावदधुऊ०।

हस्तः स्ववधयादानं, सनाहं स्यात्तुष्टयं॥ दन्तीदनावलारुमी, दिवदाहनकयादिय० मगङ्गागजानागः कुञ्जलावान
हाः कनी॥ ०० हस्तस्वनमः यमी, यथनाथसुयूथय० मदाकटा मयकवः कलरुः कनिष्ठावकः॥ यरिन्नागार्हिना म
रुः समावृक्षानिर्मदा॥ हासिकं गजनाव ० ॥ कनिष्ठाधनूकावहा॥ गद्युः कणमयादानं वमथुः कनहाकनशकु
म्भोडयि (७) णिनस, रुयामा (७) विरुः यमान्॥ ज्वग्रहाटलाटं स्या, दीषिका लक्षिकुटकं। ज्याङ्गद (७) निर्याहं कं
मल्लुचूलिका, अधः कुरु स्यवाहि स्थं, यतिमानम (७) स्ययन्। ज्ञानं कुरुदहाः स्या, त्यक्तं विन्दुजालकं॥ यरुलाग

० वाष्वा (ग), दन्तगन्धया ग्रन्थः दो पूर्वपक्षं चादि, द (हो) गगनावनक मागु। गार्तं वेष्टक मालानं वन्ध संरथ वं र
 लाज्जुका निगला मी स्या, दक्ष (हो) मी हृदि दयाः। नृपाक द्वाव नग स्या, कल्पना सूरुना समा। प्र व द्वा सुनेन मय
 ० यनि मा मः कु (थ) दयाः। वीगन्ध सा नरुसु, एवं वा निरुगज वन्धनी। धाटक यी गिउ नग, उ नरुसु व उ नरु माः। वा ५२
 जिवा सार्वगन्धर्व, रुय सेन्धव सफ यः। ज्ञानयाः कृतीनाः सृष्टिनागाः साधुवाहितः। वनायुजाः पान सीकाः का
 म्बाजावाक्त्रिका रुयाः ययुन (व्म) व सघाया उ वन मुज वाधिकः। एष्यः स्त्री गीतः कर्को, न तथा वाधनथ स्ययः

वालः कि (हो) वा वा म्ब, व उ वा वा उ वरु (हो)। विष्वा वीनं यद (वन्, दिन ने कन ग म्ब गा। क ह म्बु म ध्व म व्म नां
 रु वा रु वा व नि स्य नः। नि गल मु गला द (हो), व न्ध लु व्वा य मा व्ब व न्। ज्ञा रु दिगं (धे) नि ग कं, न विगं व ल्जिगं वृगं॥
 ग ग या मूः य के ध ना, धा हा उ पा थ म मि, यां। क वि का उ ख ली ना मी, ह रं क्री व ख नः य मा न्॥ य द्वा इ मी ल म
 ला कृ ल्, वाल रु रु मु वाल धिः। विष्वा व रु ल्, णि गो य ना व रु म्बु रु वि॥ या न व कि धि य धा (थे) हा ना रुः स्य न ना
 नथः। ज्ञा सो य य नथ व्ब क, या न न स म ना य य गा। क र्को नथः य व रु रं, रु य न के स म रु यां क्री व नः। हा क टा इ मी

स्थाङ्कडीकं वलिवाक्कं ॥ हिविकाया ययानं स्यान् आलापद्मादिकाभिर्यां उलोउदेववेयाद्यो दीयिवर्मावगन
 (था॥ याद्युक्कं वलसम्मीनः स्यन्दनः याद्युक्कं म्वली ॥ न(थका म्वलवा म्माद्याः क म्वलादिरिना दगा ॥ निषदे यादया नथ
 नथकथा नथवृज्ज ॥ धूः म्मीली वयानमूरवं ॥ स्यादथाङ्क मयस्क वः ॥ वक्कं नथङ्क नत्थाका नमिः म्मी स्यान् यधि ५०
 : प्रसात्ता यिष्ठिका नारि नकाश कीलक उदया नदीः ॥ नथ गुफि च न्(थना कू व न सु यगन्ध वः ॥ न्नु कर्षा दा च
 चसं प्रास(क्षाना यगन्ध गः ॥ सर्वं स्यादाहनं यानं यगन्धं यगन्ध के (ध वणां यन म्मा वाहनं य रुदे नी न क मभिर्या

॥ आ(धन वहा हस्तिपका रुस्य वाहानि वादिनः ॥ नियका प्राडिगायका सूनः कूला वसान थिः ॥ सद्यष्टदक्षिणास्ते
 व सहा नथ कूट्मिनः ॥ नथिनः स्यन्दना वाहा अस्म वाहा सुसादिनः ॥ राटायाध श्रया हा नः सना नका सुसेनि
 काः ॥ सनायां समवगाय सेना रु सेनिकाश्च ॥ गा वलिना य सह सहा साहमा रु सह मिहाः ॥ यविधि रुः
 यनिवनः सनानी र्वा नियगि पः ॥ कूकू का वा न वा (ध म्मी यनु मध्व सक के काः ॥ वक्षन्निगन् सान सना धिका
 (रु अथ हा र्धकां ॥ १० ॥ र्धस्थ र्ध हिन रुथ न न्नु व र्मा दं हानां ॥ उ व द्यु दः क कूटका उग नः क व वा सिर्यां ॥ आ म

कः यमि मूकश्च यिन च ध्या यिन च वना सन्नडा वर्मि नः सुका दं हि ना यूर कं क टः ॥ शिष्या मूका दया वर्म रू गा
ज्ञा व विकं ग (हा) यदा गिरि य द ग पा दार्गिकं यदा जयः ॥ यद्वध्व यदि गश्चाथ पा दार्गं यरु स रु निः ॥ ६५
जी व का दु स्य ह्य यु धा या य धिकाः समाः ॥ रु न रु सुः स प या ग वि हि र वः रु न यं स्व व ना श्र य ना इ प व ल्काः ॥ ६६
सो ल का य म्बु न्का य क शा ध नी ध न्वा न्वा न्का नि ष ज्ञा मी ध न् र्च नः ॥ स्यात्का उ वां सु का उा नः ॥ कि कः ॥
कि रु नि कः ॥ या षी क पा न व धि को य षी य न ग रु नि को ॥ ने मिं हि का सि रु निः स्यात्स मो पा सि क को नि को ॥

व र्मी रु ल क पा णिः स्यान् य ना की वे ऊ य नि क णा नू ल वः स हा य म्बु नू व ना रि व नः समाः ॥ य ना ग म ग स न य
स्य ग मः स न य नः स नाः ॥ य ना ग मः य ना ग मी म न्य ग मी उ म नू नः ॥ जं घा ला नि ज व सु लो जं घा क नि कं जा हि
को ॥ न न स्त्री ल नि ना व नी य ज वा ज व ना ज वः ॥ ज या यः ॥ क न ज नुं ज या ज न वा मा न क ॥ जे ग रु ज ना या ग
रु स लं वि दि ष नः य मि ॥ सा इ त्य मि शा य मि ती या य य मि गी णः ॥ य पि उं रू स्य नः स्या रू रू सी य डू रू नि हा या नि
नः ॥ स्या इ न स्या नू ना स ला न थि ना न थि का न थि ॥ का म ज्ञा म्य न्का मी ना क्क य नी न रु थ र हं ॥ हू ना व न श्र वि का

का. ऊ. ना. जि. क्र. थ. जि. ल. न. सां. य. गा. ना. न. हा. सा. ध. हा. म्हा. जी. द. य. सि. व्हा. ध. जि. नी. वा. हि. नी. स. ना. ए. न. ना. ना. कि. ना. व. म्हा.
व. न्ना. थि. ना. व. लं. से. न्ना. के. के. ना. क. म. क्रि. यां. बृ. ह. मु. व. ल. वि. न्ना. सा. ए. दा. द. ह्वा. द. या. य. धि. वा. य. सा. ना. बृ. ह. वा. हि.
से. न्ना. ए. ह्वा. य. वि. ग. ह्वा. उ. क. रे. क. न. था. य. व्हा. य. रि. य. क्क. य. दा. गि. का. य. ह्वा. के. लि. गु. हो. सर्व. क्क. मा. दा. र्वा. ५२
य. थ. रु. नां. स. ना. म्हा. वं. गु. ल. म. ग. हो. वा. हि. नी. ए. न. ना. व. म्हा. अ. नी. कि. ना. द. ह्म. नी. कि. न्ना. हो. रि. व्हा. थ. स. म्हा. दि. स. म्हा.
रि. व्हा. व. ल. क्की. व्हा. वि. य. ह्वा. वि. य. दा. य. दा. अ. य. ध. नु. प. ह. न. हां. हा. मु. म. मु. म. था. सि. यो. ध. न्ना. यो. ध. न्ना. व. हा. ना. स. न. का.

द. ह्वा. का. म्हा. कां. व्हा. सा. या. थ. क. ह्वा. स. का. ल. ए. ह्वा. ना. स. नां. क. पि. ध. उ. स. म्हा. उ. व. ग. हा. व. य. न. यं. स. का. का. रि. न.
सा. ठ. ना. म. ध. ग. ल. का. घा. न. वा. न. हा. ल. रु. क. नु. ध. न्ना. म्हा. म्हा. मो. वी. का. सि. जि. ना. गु. हा. सा. य. य. ला. ली. द. मा. ली. द.
मि. त्या. दि. ह्वा. न. य. के. कां. ल. क्क. ल. दं. हा. न. वा. ऊ. हा. ना. सा. स. उ. पा. स. नां. ए. व. ल. वा. हा. वि. हि. ता. अ. जि. क्क. ग. स. व. म्हा.
गु. म्हा. क. ल. म्हा. म. र्ज. हां. हा. ना. व. गी. ना. य. व्हा. व्हा. य. हा. व. क्क. उ. ना. लु. ना. ना. वा. य. क्क. व. क्क. सि. व्हा. ल. ना. नि. न. रु. व्हा.
दि. ग. वा. हा. वि. वा. क. दि. ग्वा. लि. फ. को. उ. हा. म. पा. स. क्क. उ. ना. न. नि. य. क्क. व्हा. धि. र्द. या. गा. व्हा. व्हा. व्हा. उ. नि. लि. हा. व.

अथासासिनिष्टयः कोट्यका मधुलाग्रः कनवालः कृपाव वनात्स नः खभादि मृशे स्यान्मखलागनिवधनां रुत
काशमि रुतं वर्म सग्राहामृष्टिनस्ययः॥ द्रव्यं मद्रव चनो स्यादीलीकनपालिका॥ रिन्धियालः सृग सुलो य
निघः यनिघागनः॥ दयाः कृ ० नः वधि • मिः यनः श्रुयन वधः स्याद्युक्तीवासिपृथीव् इन्द्रिकावासिध ५३
नका॥ वायूं सहालं हाहूर्ना सर्वलागामनामियां पासुक्रुः काह सु स्रियः पाल्यष्टिका टयः॥ सर्वो रि स
नः सर्वोद्यः सर्व सन्नदनार्थकः॥ लाहा रिहा ना इमुरगां ना हंती ऊना विधिः॥ यत्सनया रिगमन मनो नद रि

षहानां यागवध्कारिनि यानि यस्तानंगमनंगमः॥ स्यादा सानः युस्रवा यर्के वे वलिगार्थकां अदिगान् य
त्यरीगस्य नहायानमरि कु मः॥ वेगालिका वाधकनाः अक्रिका घाष्टिका र्थकाः॥ स्मृग्गधसु सधूका वंदि
नः सुगिया ० काः॥ संहक का मु समया • संग्रामाद निवर्त्तिनः नवर्द्धयाः स्रियां धूलिः पां ह नानदया
नजः॥ वृ (कुका दः समुत्पि ० यि ० लोह हा माकुलायमाका वे ऊयनी स्यात्कननं धज मस्रियां॥ सावीना संहानं य
इह मिश्या गिरययदा अरुं पूर्व मरुं पूर्व मिथरुं पूर्विका स्रियां॥ आहायू नृषिका दयो नू या स्यात्सका वनात्सनि

अरुमरुमिकाठुस्यारूपनस्यनंवत्यहंकावशादविहान्नसुखावल (हो) र्याहिरुमशुषांवाहाकिः यत्राकसया
(हो) विक्रमस्यमिहाकिगावावपाननुयत्तानं वरुणविनिवाव (हा) यक्षमायाधनंउचं प्रधनंप्रविद्यावहां॥
मधमास्त्यनंसंरचं समीकं साम्यनायि • कं। अस्त्रियां समनानीक वधाः कलहविग्रहो॥ सम्युहनाशिसम्या ७४
नकलिसंस्तुठसंयुगाः अस्यामर्दसमाधान संग्रमायागमाहवाशा समदायः क्रियः संषण् समित्याजि
समिधधः नियुद्धं स्यात् रुमूलंनहासकल्ला रुणाठुसिंहनादः स्यात् कनिष्ठाश्चटनाद्येठा। कुचनंयाधसंवा

वा वृद्धिर्नंकनिगर्जिगां॥ वित्तावाधनूषः स्थानः यटहाउम्वत्रो समो। यसरुमुवलाकावा रु (अथ) स्थलिनंयुलं
॥ अऊनांकीवसत्यात उयसर्जः समनुयां मूछातुकहमलंमाहा यावमर्दमुपाठनं॥ अथवस्त्यनंत्वस्या सा
दनंविजयाजयः वेनशुद्धिः यमीकावा • वेननिर्यागनंवसा॥ यदावाडावसदाव सन्दावाविप्रवादवः
। अयकुमाययानश्च न (हारकः) यनाजयः॥ यनाजिनयनाहो विष्णुस्त्रिनादिभो। यमायनंनिवर्द्धनं नि
कावहांविहानहां॥ युवाहनंयवाहनं निरुद्धनंनिहिंसनं। निर्वोहनं संहयनं निरुद्धनमयाहनं॥ निरुद्ध

हं निरुननं रुनसं पविर्वर्नं विवर्नं विवर्नं सा वहां युगिघाटनं उदासनं युधमनं कथनाज्ञासना
निवाआलमयिऊविहान् घागामनु विवर्नं स्यात् रुनाकालधर्मा दिष्टानः युलयास्य यः अज्ञाना (६)
दयामृत्यु मनहां निधनाभियां यनासृषा कपश्चल पवनयग सस्तिगाः मंगं यमी मोविष म विनावि (७)
ह्याविमिः प्रियां कवं धमि क्रियायूक मय मूर्धकलवनं हमहानं स्यात् युपिहवनं कृदायः हावमभियां ॥
यग्रहायग्रहोवद्यां काना स्यादन्धनालय ॥ यंसिहम सवः पाक्ष (८) वंजी वा सधमहां आयुजी विनकाला

नाजी वायुजी विमोषधं ॥ राहुप्रियवर्जः ॥ राउनवाउ नजाज्यो वेहमहमिह्या (९) विहाना अजी वाजी वि
कावार्त्त वरिर्वरुनजीवनाभियां रुषिः पागुयात्वं वासिकं वगिरुयः हासवाध्वरुनिननं रुविनृभुमि
लंत्वं ॥ दयाविनायाविमया रथसंखं मनामनां सत्यानमम्वहिरुवः स्यादहां पर्यदरुनं उजा नार्थ
ययागुरु कृसीदं रुडिजीविका याज्ञायां याविनकं निमयादायमित्यकां उरुमधुधम (१०) दो ययागुरुमय
कोकमात्रा कृसीदिका वाईषिका रुद्राजीववर्वाईषिः ॥ रुद्राजीवः कर्षकश्च रुषकश्च रुषावलः रुद्रुं

वेरुयहमलयं वीदिहमल्युह वाविगां यचंय वचंय विचंय वादिह वनं दियगा मित्यने लानवमाषा मादूर
झादिनूयना॥ मोझीनको डवीनादि (वाषघा न्याहवक्ष मां वीजाकर्म शुक्रकर्म सौत्यं कृष्टकृत्यवगां विगुहाक
नं हगीयाकर्म विरुलं वि हो ल्यमपि सिन्ना • दिगुहाकर्म उः सर्वं पूर्व संवाकर्म मयी॥ डाहाटकादिवायादो डो ५५
निकाट किकादयः शरानी वायमुखावीक उरुमर्धुदयस्त्रिषा यन्नयं सकया र्वयः कदानः कृत्य मस्युता केदा
वकं स्यात्केदायं केतुं केदानिकंग (हा॥ लाहा निलखवः यं सि काटि (हाल दूर दनः शोहनकादनं मां र्व

निगुमवदान हां॥ दागं लविगु माव (श्म यागं याक माथरुलं निनीषं कूटकं रुलः कृषिकाला कूलं रुलं॥ (गमदान
(हाक्ष सीवध्व हा म्या मीयुगकीलकः॥ नीषाला कूल दगुः स्यात् सीताला कूल पक्षिगः॥ यं सिमधिः खलदान न्य
यत्युवधना आशु वीदिः वाटलः स्यात् हाग (हो कय वो समो॥ ना क मुनग रुत्रिग कलाय मुसगीनकः रुन
दूरखडिको वासिन् कावदुःख मुकादवः॥ मङ्गल्य काम सुनाथ मङ्गल्यक मयल्लको॥ वनमङ्गल्य सर्वयु हो नमुलक
दम्यको॥ सिद्धार्थ लवधवला (गधूमः समनः समो॥ स्याद्यावक मुकत्मा ष्वनकारुनि मङ्गलः॥ हो निलगिल य

कैर्यालुर्गलनिका॥पि०२०॥सुखाकुं कसहामुत्रिषुदयाः॥घटःकुटनियावप्ति॥हानावावर्धमानकः॥
अजीषंयिष्यवनं कंसाप्तिवानराजनो॥कुरुःकुरुःसुखाकुं सेवाल्याकुं यःयमाना॥सर्वमावयनंराघु॥या
गामुक्तराजनं॥दर्चिःकम्बिःखजाकाव॥स्यारुर्द्वारुसुकः॥अप्ति॥हानकंरुविनकं॥हिरुवस्यनुनालिका॥७८
कउम्वश्चकलम्वश्च॥वसुवावउयस्कनः॥तिनिडीकश्चवृकश्च॥वृकासुमथवलजं॥मविर्वंकालकंरुसुम
षहंधर्मयरुनांजीवकाजव॥हानाजी॥कहानुसुतुजीवक॥सुखवीकालवी॥यथा॥यथः॥कालापकुशिका॥

आर्द्धकंठंगववस्या॥यथरुगाविउन्नकं॥कमुम्वववधन्याक॥मथशुष्ठासहोषधं॥स्तीनयंसकयार्चिष्व॥नाग
वंविष्वशषजं॥आवनालकसोवीवकुल्लाषारिषुगानिवा॥अवनिसामधन्यास॥कुरुलानिवकाजिकं॥सुरुसुवधि
ऊतुकं॥वाहीकंहिहुनाम०॥नत्यगीकानवी॥यथा॥वाष्ठीकाकववी॥यथः॥निहानकाकाश्चनीयीना॥रुविडावववर्हि
नी॥सामुदंयलुलवन॥महीवम्वहिवश्चन॥सेन्धवाप्ति॥हीनहिवं॥माहिमनुश्चसिन्धु॥नोमकवसुकंपाकं
विउश्चकुरुकदयां॥सोवर्चलरुवक॥निलकंगुमवक॥मत्स्युदीरुलिनंरुव॥विकावोहकंनारिगा॥कूर्चिः

काक्षी नविकृतिः स्यादसाला उ मार्जिता ॥ स्या रु मन कुनिष्ठानं, तिलिङ्गा वासिगावधः ॥ शूला कर्म रटि रक्ष शूल्य मरु
कुये ० नं ॥ युष्माग मय सम्पन्नं, युय सं स्यात्स संस्कर्म ॥ स्यात्पिष्टिल कुविजिनं, संम र्छं (हम धितं स म ॥ विक्रं मरु हं
सिग्धं, उल्ल राविग वासिगा आ यकं योति न स्या लाजाः यू र्मि वा कर्म ॥ पथकः स्यात्त्रिपिठका, धनारु रय वशि ५२
यः ॥ यू पा यू पः पिष्टकः स्यात् क न म्हा दधि हा क वः ॥ हि स्या म्ही र क म (म्व ॥ मा द ना म्ही स दी दि विः ॥ हि सि माः
दग्धिका सर्व, न सा (श म यु म क्षियां ॥ मा स ना वा म निः आ वा, म धु र क स म ह व ॥ य वा ग नृ क्षिका श्र द्वा विलयी नः

नला व सा ॥ गव्यं विष्म गवा सर्वं (ग वि (अ म य म क्षियां ॥ ग दि शु कं क नी षा म्ही, दग्धं की नं य यः स मः ॥ य य स मा क द
ध्मा दि, उ स्यं द धि च न न न ना च न मा कं रु विः स र्थि, न व नी गं न वा कर्म ॥ ग रु र्हे य क वी नं य न क्का (ग दा हा रु वं च
गं ॥ द शु म रु नं क ल (हा य, म नि र्म म यि (ग न सः ॥ ग कं क द धि न म थि गं, या दा म्ब र्ज म्ब नि र्क ली मे हुं द धि र वं म मु
य यू षा हि न वं य यः ॥ अ स ना या वृ उ र्हा रु द्वा स मु क व लार्थ कः ॥ स यो तिः म्ही तु ल्य पा नं, स र्धिः म्ही स रु रा ज नं ॥
उ द न्या उ पि पा सा दृ, ग र्वा ज ग्धि मु रा ज नं ॥ अ म नं ल य आ हा ना, नि च सा न्या दः ॥ य पि ॥ सो दि त्यं न र्थ हां र

किं रुला रुक समुद्रिर्मां कामं प्रका मं पर्या कं निका मखय (थसिर्मां॥ (गध (गधाल (गध संख्य (गध गमही न
 वल्लवाः॥ (गम मरिष्यादिकं याद वन्धनं छोग वा ध्वन॥ (गमान् (गमा (गम कुलकु (गधनं स्यान् गवा वज्राणि
 यासिर्मां गवीनं गन् गधाय यासिगाः यमा॥ उक्ता रुडा वली वद्ध अषरा वषरा वषः॥ अनघान् सोन रया (गे न १०
 झां रुमि नो रुकं॥ गवा (गग गवां वत्स (धन्वा र्वात्सक (धेनूकं। रषा मरुत नरुतः स्या दृडा रुकुन वज्र वः॥ उत्य
 न उक्ता जा मा रुका द म्म वत्स ग नो स मो आष सः वत्स ना या गध, ष (रुत (गध गति विद्व नः॥ रुच्य प्रय हा नु वरुः सा

सा रुगल क म्बलः॥ स्यान्न सिन सुन स्या गः यरु वा रु यग या र्वगः॥ यम दीनारु वा टा ना यग्ध या संग्रह क टाः॥ ख
 नमि ग न नहा रा स्य दं दालिक सेनिको॥ धूर्व रु धूर्य (धे नय धूनी एमः स धून च नाः॥ उ रा व क धूनी (दोक धूना व क
 धूना वरु॥ सतु सर्व धूनी एमः स्या द्या वे सर्व धूना वरुः॥ मा रु यो सोन रया (गे न सामा गा वरुं गि हा॥ अरु न्य ध्या ना
 हि हा स्या इरु मा (गध ने विकी। वर्धु दि र दा सं हः स्यः हा वली ध वला द यः॥ दि हा य नी दि व र्वा (गे व का दाल
 क हा य नी। वल व ध्वा व ना का रु सु व न र्वा थ सा चिनी॥ आ का ना वृष र हा थ व द न र्वा य चा तिनी। का ल्या य सं र्वा पु रु न य

श्रीदीवालगर्हिणी॥ स्यादवधुः सुकना, वरुः सुतिष्ठनसूका॥ विनसूगावकयनी, (धनुः स्यान्नवसूतिका॥ सुवतासुखसन्धाः
 का, यानाध्रीयावनसूती॥ दाहाकीनादाहादूया, (धनुः स्यान्नवसूतिका॥ समांसमीनासायेव युतिवर्षयसूयता॥ उधसूकीवः
 मायीनं, समोहितवककीलको॥ नयंसिदामसंदान, यद्युनरुसुदामती॥ वेणाखमन्कमन्कान्, मन्कानामन्कदण्डक॥ क० नादण्ड ॥
 विश्वम्हा, मन्कनीगर्भनीसम॥ उधुकुमलकमय, मन्हाज्ञाः कनराः ॥ ६७॥ कनराः ॥ ६८॥ हलका, दानवेः पादवधनेः॥ अ
 जाह्यागीसुहृद्ग, वरुः सुगलका ॥ ६९॥ मदानराव(णा)र्धुय, मयवृहय ॥ ७०॥ उधुनराजवृद्धस्या, दोषकोनराजका

॥ वक्त्रवक्त्रमुवालयः ॥ सहागर्दराः खनाः ॥ वेदसूक्तः सार्थवाहः नेगमावाहिजावहिकः ॥ यक्षः जीवाकायविकः ॥ कय
विक्रयिकः ॥ विक्रयिकायादिक्रयिकः ॥ कायकः ॥ कयिकः ॥ समो ॥ वाहिः ॥ कुरुवहिकः ॥ मूल्यं वस्त्रायवकयः ॥ नी
यनिपंक्षंमूल्यं धनं लालोधिकंरुलं ॥ यतिदानं पनादलीनेभयनिसया ॥ वधिः ॥ यमान्पनिधिर्न्यासः ॥ युगिदानं गद
र्यंक्षं ॥ कथप्रसात्रिगं कयं कयं कयं माणकः ॥ विक्रयं पक्षिगयः ॥ यक्षं कथादयस्त्रिषू ॥ जीवसत्यायक्षं सत्यं कानः ॥
सत्याकृतिः ॥ श्रियां ॥ विपक्षः ॥ विक्रयः ॥ संख्याः ॥ संख्यायकादक्षत्रिषू ॥ विंशत्यायाः ॥ सदेकत्वं ॥ सर्वः ॥ संख्यायाः ॥ संख्याथेदिव

हलं सु. लासुवानव नं ४ सुय ४ ॥ यंक ४ ॥ न सुदसादि. कुमादहागु. (लाह वं) ॥ योत वंदु वयं याय. मिगिमानार्थकं ययं ॥ मा
 नकुलाहुलिपुने गुंजा ४ पक्ष ४ यमाय क ४ ॥ नपाउहा ४ क ४ कर्षी सु. यलंक र्ववतु ययं ॥ सुवर्णु विहो हमा क. कुन विहो सुत
 यल ॥ कुलासियां यलहात. कान ४ स्यादिं हा गि सु. ला ४ ॥ अविगदहाग. ना ४ स्या ४ हा कटागान अविग ४ ॥ कार्षी यल ॥ २
 ४ कार्षी क ४ स्या. कार्षी क ग सि क य ४ ॥ अस्त्रिया मा दं कडा हो. खानी वादानि क ४ क ४ ॥ कउव ४ य सु ४ ॥ य ४ यानिमा
 हाथ का ४ यथ क ॥ या दकु नीया राग ४ स्या दं हा रा (गो रु व ४ क ४ ॥ उयं विहं स्या य गयं. निह सु कंधनं वसु ॥ दिन ४ धं द

विहं घृत्त. मथने विहवा जू पि ॥ स्या ला व य दि न (हा ४ ॥ दम नू य कगा क र ॥ गाल्यां य द नारु क क थं. नू यं गद य मा द गं ॥ गान
 लु रं म न क ग. म ह म ग रं र्हा न ह म हा ४ ॥ ॥ हा न लं ला दि न कं य म वा (ग थ मो कि कं ॥ म क्का थ वि द्म ४ यं सि य वा लं प न यं स
 कं ॥ न लं म लि र्द्य या व ह म. जा नो म क्का दि क पि वा. स्य र्हु सु व र्हु क न कं दि न. धं र म दा ट कं ॥ न य नी यं हा ग क र्मु ग (क यं
 र ह्म क र्त्र नां वा मी क नं जा ग नू यं म हा न ज क का ४ नं ॥ न कं कार्हु स नं जा म्ब न द म हा य या सि यो ॥ अ ल क्का न सु व र्हु य. ह
 ही क न मि त्य द ४ ॥ द र्हु र्हु न ज गं नू यं. ख र्हु नं (व्य ग मि त्य पि ॥ वी ति ४ सि य मा न क र्गो. न सि य म थ ग म कं ॥ ॥ हलं ह ह

मुखं घृष्टं वनिष्ठोदधनानिव । लाक्षाश्चुक्रिह्मकं गङ्गां, पिष्टुक्कालायसायसी ॥ अङ्गसावाथसुष्टुलं सिद्धाहमपिगन्मल
सर्वकेशैरुसंलाहं, विकान्तलयसकृष्णी ॥ कान्ठकावाथवयला, नसुष्टुतम्ययानद ॥ गवलंमासिषष्टिह्मकं गन्जि
मला ॥ एताञ्चनकुसुमीवीनं, कायाताञ्चनयामने । रुक्ताञ्चनं हि खिणीवं, पिष्टुत्तकं मयूकं ॥ कर्पूनीदर्विकाका ॥ थरुव ॥ २
कुथंनसाञ्चनं ॥ नसगर्हनाद्वहोले, गन्धह्मनिष्टुगन्धक ॥ सोगन्धिक ॥ श्ववक्र्याकलालो रुक्ललथिका । नीगियुष्यं
युष्यकुरुषोष्यकं कुसुमाञ्चनं ॥ पिञ्चनं पीतनं ताल, मालञ्चनं नितालक ॥ गोत्रयमर्थगिन्ज, सहमज्जकं हिलाज्जु ॥

वालगधनसुखाद्यिष्टुगमसहासासमासादिष्टुनाश्रितिकरुनसिद्धनंनागसंरुवं॥नागसीसकथागध्वं वधुदि
उपयिष्टुं॥नरुवर्जुअथयिष्टु॥कलाथकमलारुनं॥वि॥॥स्यात्सुनं वक्रिहित्वं॥महावजनामत्ययि॥भषकमलउष्टु
य॥हाहाहृंहाहालामनि॥मधुकोदंमादिकादिमधुद्विष्टुसिक्तकं॥मन॥हिलारुकुनटीमनाहानागडिकिका
॥नेयालीकुनटीगला॥यवकावायवागु॥याथाथसर्जिकाकाव॥कायाग॥सुखवर्वक॥सोवर्वनंस्याद्वकंलककी
नावंहावावना॥हिरुजं॥ग्वगमनिष्टु॥मानटंमूलमेकवं॥गक्तिकं॥यिष्टुलीमूलश्चटिकाहिन॥त्ययि॥गलासीरुगक॥

॥ ज्ञानाय शान्तिं वक्तुं नन्दनं त्रिकदशसंवाचं त्रिरुल्लसत्तुल्यम् ॥

॥ वेङ्कटवर्ग ॥

बाहूडाश्रावनवर्ष

म्य. वृषलाञ्छयन्या ४॥ आवाला लालु संकीर्ण मृक वक्षदय ४॥ झुजा वि. (हासु क व. (हा. मृ. शवेष्मादि ज म ना ४॥ झु
 डा क क्रिया धान्. (गम मा ग ध ४ क क्रिया वि. (हा ४॥ मादि शा ३ या क क्रिय या ४ क. कार्या ६५ य ४ सूत ४॥ वा म्. ल्. क क्रिया ग्. सूत १४
 सु स्या म्. वेद ह का वि. (हा ४॥ नथ का न सु मा दि शा क्. क व. ल्. य म्. म म्. वं ४॥ स्या द्वा ल ल मु. जिनि गा. वा म्. ल्. वृष ल न य ४॥ का न् ४
 णि ल्. यी मं. ह ते. र्. द्. य ४॥ (हा. (हा. ४॥ स ह जा नि रि ४॥ क लि क ४॥ स्या क्. कु ल. (हा. यी. माला का न मु. मालि क ४॥ क्. क्. का न ४॥ क्. लाल ४॥ स्या त्य

लगलुमुलयक१। तनुवाय१ कविन्द१ स्यात्तु नवायमु सोविक१। नङ्गाजी वञ्चिउकन१। हामु माऊँ शिखावक१। पादूकु चर्म
काव१ स्यात्। थाका नालाह कावक१। नातिधम१ खर्बुका न१ कलादानूक्तकावक१। स्याच्छक्ति१ काच्चविक१। होलिकसामुकक
१। गकाहुवर्वकिल्लस। नथकावश्चकासुरग। गुमाधीनागमरक१ कोट । गकाइनधीनक१। रुनिमष्ट्रु दिवाकीलिना
यिताकावजायिन१। निहुरुजक१ स्याडजक१। होलिकामलुदावनक१। जावाल१ स्यादजाजी वसुधवल१। स्यान्मायाहान्ननीमा
या। कावसुपरित्तानक१। होलालिनमुहोलूषा। जायाजीवा१ कक्षाब्धिन१। रुनगां लूपिनटा अवहासुकलीलवा१। मार्द

क्रिकामोनजिकाः यासिवादासुपासिद्याः १ वक्ष्याः १ सार्वेष्टविका. वीष्वादासुवेसिकाः १ जीवाककः १ कृनिका. दोवागुः
निकालिको १ वेतंसिकः १ कोटिकश्च. मांसिकश्च समुद्रयः १ रुतकारुतिरुर्कर्म. कनोवेगनिकश्च सरेवा र्जवक्षोवेवधिका. रा
नवादसुतानिकः १ विवर्धुः १ यासनानीवः १ पाकनश्च यथञ्जनः १ नि • दीनायसदाजाल्मः १ कुलक. यतनश्च सः १ रा १५
हदाधनदासय. दास (गायकचटकाः १ निशा किकिंकनयश्च. रुडिषयनिवनकाः १ यनाचितयनिकश्च यनजातपनिः
धितामन्दसुन्दयनिमृज. जालसाः १ जीरकाः १ लसाः १ नृः १ दकदुवदुनयललयटवः १ स्थानउरुश्च १ वक्षुलयवमात

क्र. दिवाकीरुजलरुमाः १ निषादश्च यवावक. वासिवाक्षुलयूकः १ रुदाः १ किनारहावन. प्लित्यामदुजानयः १ व्याध्या
मृगवधाजीवा. मृगायूर्लवकापिसः १ कोलयकः १ मानमयः १ ककुनामृगादंहाकः १ हुनकारुचकः १ व्यास्या. दलकेसुसथाः
गिराः १ व्याविष्टकदुर्मेगया. कुशलः १ सन • माहुनी १ विष्टवः १ कनागाम्या. वर्कवकवृक्षः १ पशुः १ जाशुदनंमृगाः
यंस्या. दाखधमृगायाप्ति. यां १ दक्षिणार्लवयाग. दक्षिणार्कवकः १ वीनेकागानिकफुत. दस्युगकनमायकाः १ पुत
नाधयनासुदि. पाटन्नवमलिलुवाः १ वीनिकारु. यथोर्थव. रुयंलापुंरुगजनं १ वीरंसम्पूयकनहं. वक्षनमृगायदिः

लो॥ उन्माथ ४ कूटयं गुंसा दागुनामगवधनी ॥ ६७ ल्वं वनाटक ४ मी तु वरुमिष्ववटीगुल ४ ॥ उद्याटनं घटीयक सलिलादा
 गुनामगवधनी ॥ ६८ दनं पद ४ ॥ यं सिवमावापद ६ ४ सूजाहिननिगकव ४ ॥ वाणि र्यति ४ म्रियो तुल्य परुलतयादिकर्मणि
 ॥ यक्षलिका पुरिका स्याद्वमुदकादिरी ४ कृ गा ४ ॥ पिटक ४ पटक ४ धजाम ४ ॥ पाथविद्वज्जिका ॥ रात्रयसिफुदालवि ॥ १८
 ॥ शिक्का वाथपादका ॥ पादू ननगुमी सेवा नूपदीनायदायगा ॥ नडी वनगसा दक्ष्मादसा उती कर्म ॥ वधुलिका रुकंश
 लवीक्षा वधुलवलकी ॥ नानावी स्यादघणिका ॥ ६९ ॥ सुनिकम ४ कष ४ ॥ वधन ४ पण्य नहु निषीका हलिका समे ॥

तेजसावरुनी मूषा रमुवर्मपुसविका ॥ लाहटनी वधनिका रुपीक्षा कर्कनी सम ॥ वकादना वकरदी ॥ टक ४ पाषाणदा वहा ४
 क कवासी कवपुंसा दावर्मरुदिका ॥ ६९ मी सुक्षाला ह्युतिमा ॥ हिल्यरु कर्म कलादिकं ॥ पुतिमानं पुतिविम्व पुतिमा पुति
 यातना पुतिरुया ॥ ७० ॥ पुतिरुतिवर्चायं सि पुतिनिधि नूपमायमान स्यात् ॥ वाचलि ४ समदुल्य ४ सदृष्ट ४ स
 दृक ॥ साधन ४ समान ४ स्यू नूळ नपदलमी ॥ निरुजं कां गनी कां प्रणीका ॥ ७१ ॥ पायमादय ४ ॥ कर्म ४ ॥ रुविधा हत्या ह
 तया रर्मवर्गनं ॥ रुवर्गं रुवर्गं मूल्यं निर्वर्ग ४ पहा ॥ ७२ ॥ यि ॥ ॥ सूना हलिपिया हला पत्रिमुत्तव नूला लजा ॥ गंधाक

गिरुगहिकिगाः१वेला निकः४रुतमुखः४रुगीकुशलः४रुयपिः४यूक्तः४यगीक्तः४सांहायिकः४संहायायनमानसः४दकि
हीयादकिष्ठादसुगदाकिष्ठाः४रुयपिः४सर्वदान्यकुललकदाः४लो४वहुप्रदः४जेवाहकः४स्यादायूष्मानकवर्गिः
सुष्मासुविगः४यनीककः४कानहिकाः४वनदसुसमर्द्धयः४दस्यमाः४विकूर्वाः४यमन्त्रकृष्मानसः४३र्मनादि १६
मनाश्रुर्मनाः४स्याइकउमनाः४दकिः४सत्रलादानोसकलादाहणकाविनित्यवयसिगासकाविस्थार्थदूकउत्सकः४य
गीगयथिमंस्वामंविहयहानविष्कनाः४गुलोः४यगीगशुकुगलकृष्णादिगत्रलकः४लोः४रुयपिः४आधनीस्यामीस्वीयवः४य

निनीतिगामधिरुर्जायकानना यशुःयनिवृथाधिवःअधिकार्द्धःसमृद्धःस्यान्कुट्टमवायनसुयःअष्टादत्यागानिकसु
स्मिन्न्याधिश्रयमानयंवनारुन्नयायमायःसिंहसंरुननारुसःअनिर्वायःकार्यकर्त्तव्यःसम्यगन्सत्त्वसम्यदाअवावि
मकाथमनाजवःसपितृसन्नेरुःसत्त्वत्वालं कृगांकनांयादयानिसकूकूदःअलक्ष्मीवास्तुश्रुवाःअलःअमानसिग्धसु
वत्सलःअष्टादयालःकानूतिकःकयालःसुननःसमाःअस्वगतायावृमःखेनीस्वच्छानिनवयदःअयननक्तःयनाधीन
यनवानाथवानपिअधीनानिघ्नआयरास्वच्छानिगताकायासोअस्वलयःअष्टादशकनादीर्घसुगुश्चिनक्रियःअजालास

मीरुका नीत्यान् कुलमन्त्रः क्रियासूयः कर्मकमाश्लक्ष्मीः क्रियावान् कर्मसूयः सकाशः कर्महालायः कर्म
धनमुकर्म ०५५ हनधनुकर्मः कर्मकावमुक्तियः अयस्मात्तमस्तम आसिषाणीतु (लोक्लक्ष्मा वृत्तिगः) १२
गुरुधीगा जिह्वत्तनाना यिनः यनान्नः यनपि अथा हनुकायसनाश्च वक्ष्यन्तः स्याद्योदविका विजिगीषा
विवर्जितगण्डलोत्तास रुविः कृत्ति रुविः स्वायवयवकसर्वोत्तीनलुसर्वोत्तीन राजीगधुमुगर्जनः लुक्वाशिला
षुकसूषुक समोलालयलालोत्तासनादरुनादिषुः स्यादविनीगः समुद्रगः मरुहो (अलुठकी वाः) कामुककमिः

गानुकः कमुः कामपिगाह्रीकः कामनः कमनारिकः विधेयाविनयग्रही ववनरुग आद्य वः वः यः (हाया
निरुग विनीगं प्रणिगानैसमाधधृष्टधृष्टवियातश्च प्रगल्भः यतिगान्विगन स्यादधृष्टुहमलीना विलक्षाविस्मया
न्विगभध्वानकागनमुसो गानूहनुकरा लुकाः आहारुमहाजिगवि गृहयालुग्रीहीगनिष्ठालः अद्ययाय
क यमयालुमुयातुकलक्षाणीलः यगयिषु चन्दान्नरिवायकगवा नृद्योगकाहिंसुः स्यादार्द्धिषु मुवर्जनः
उत्पल्लिषु सुयमिगा श्लोकनिषु सुमन्दनः अहर्षु रविषु रविगा वरुषु वरुनः समोन निनाकविषुः किषुः स्यान् सा

[illegible]

इमं खमखनावद्धमखोहाकृष्टपियम्वदालादलः स्यादसूटवाप्यर्थवादीरुकाद्वयः । समो कवायकवने स्यादसो सखवखन
 १ । नववहाः हाद्यनानादी वादीनानादीकवः समो । ऊकाररूगुमृकमुवकुं (अगुमहाकिता । रूखीहालसु रूखीका नग्यावा
 सादिगम्वनः ॥ निकासिगाऽवकृष्टः स्यादय चसुमुधिकूतः । आरुगर्वाऽरिरुतः स्याद्वापि तः साधितः समो ॥ अधि
 किफयति किफोवडकीलितसंयगो । आयन आयतुपायः स्यात्कादिहीकारयदः ॥ आकावितः काविताऽतारिह
 रुसकृसूकासुन । वसनालीयनकोधोविहसुवाकूलोसमो । विहवाविहलः स्यादु विविहाविहदुदुधो ॥ कः

१ कक्षादसन्नद्ध. लोकाया वधाय ग. दध्या लक्ष्मि गता वधाय ४. लीष्येष्टय ०० सोमो १ विद्या विषयाया वधाय. महा ल्यामहा लनय ४
१ लिलिखि दान ४ कस्य कर्मा वयलस्थि कन ४ सोमो १ दाषे कष्ट कपूना रागी. निरुगल नृश ४ ० ४ १ क. (कुं) जय ४ सूचक ४ स्यात्. पिछु
ना दुर्जन ४ खल १ नृहांसा घातक ४ कन ४ पाया धूर्त्त सुवंचक ४ अरु मूढ यथा जात. मूर्ख वेधय वालि सौ ४ १ कयर्थ कय ४ १
१ कदू. किम्यवानमिगम्यवा ४ १ नित्य सुदुर्विधा दीना. दनिडा दुर्मतापि स ४ १ वनायका यावनका. माग्ने (ग) वाव काथिनो १ अरु
कानवा संयु ४ १ रुंयु सु ४ १ रा न्वि ४ १ दिवा यपाइ कायवा. मृगवा या जनायू ४ १ स्वदजा ४ कृमि दंष्ट्रा या ४ पक्षि सर्पा दया

लुजा १॥ ॥ या नि वर्ग १॥ ॥ उद्दि दस्तु गुल्मा या उद्दि दस्तु मृदि दं । सुद नं न वि वं वा न वा न् । सुध मं सा धू ए
 र नं ॥ का कं म ना न मं नू यं । म ना हं म र्म म कूलं । ग द स च न कं । ल य न्ना स्य का य स्य द र्श ना न् । अ री ष्ट री षि रं द र्यं । द यि रं
 व ल रं पियं । नि कृ ष्ट य नि कृ ष्ट व । न र्हा या या व मा ध मा १ । कृ ष्ट य कृ ष्टि । ता व य । ख र ग र्क ण का १ सु मा १ । म ली म म न्
 म लिनं क व नं म ल दू षि नं । य नं य वि नं म ध र्म वी ध रु वि म लार्थ कं । नि ष्टि क । णा धि रं म र्म । निः णा ध म न व र्क नं । अ मा नं
 रु ल । शू न्य रु व णि क रु च्चु वि क क । की व य ध नं । य म र्ख । य व का नू रू मा रु मा १ । म र्ख व र्क व न व र्क । य व र्क । य व र्क । य व र्क । य व र्क ।

[illegible]

नीयकुगलय, संख्या गगलिनमथ सर्वविषयमाहासंक, संवि(नवसंम)नि, खिलाखिलानिनिः(नवसं) समग्रं सकलं
यत्, मखलुः स्यादनूनकाद्यनंनिबन्धनं सार्यं, यत्तवंविनलंगनू समीपनिकटासन्न, सन्निकृष्टं सनीउवग्नस्यद्वि
स्याससविध, समर्थादहावहावत्तउपकृष्टनिकात्यं, स्यात्तुम् ॥ द्यारिगाइवयं संसकृष्टव्यवदिनं मय
दाननमित्यपि नदिष्टमनिकगमं, स्याद्वनंविप्रकृष्टकांदवियश्चदविष्टकृ, सृष्टनदीर्घमायगं वत्तलं निरु
लं वत्तं, वन्धनं तु नगानगं उच्चवाहुनगाद(ग्र)हिताहु(कथ)वामनन्यास्त्रीवखवत्तस्याः स्य, नवा(ग्र)वनगानगं ॥

नालं रजिनं जिह्मं मर्मि मन् कुक्षिर्गनं गं आ विहं कुटिलं उगं वलिर्गं वकमित्यपि अजा वजिह्म प्रगुलो वा रु
 त्वप्रगुलकूलो मन्ध्वगु कुक्षानित्य सदा गन सना गनाऽऽ ह्मासुऽस्मिन्नगनऽरुया नक नूपगया तु यथका
 लयायी सकूटसुऽस्मा वनाज्जम गनऽवनिहूज्जम वनं ग्रहमि ॥ ६३ ॥ अं वना वनं वलनं कम्बनं कम्बं वलं लालं
 वला वलं वरुलं गनलं वे व पाविह्व वयनिह्व वना अगि विकऽस मधिका दृष्ट ससि सुसंरुग भक श्कटं कठिनं
 कुनं काभनं निह्वनं दृष्टं ज० नं मर्हं मन्मूर्हं प्रवृद्धं याद मधिर्गं यनाहा यन नयल यना गनं विनं गनाऽऽ प्रत्यय

शिनवानवा नवी नानू गनान वऽनू लश्च सकृमानु का मलं मर्दलं मर्दन् अन्व गन्व रुमन् (ग ३ न्ययं कीव सचयं
 यथर्हं स्यादेंदियक मपत्य रुमगीन्द्रियं चक गानान नावलि नका (रोकायना वयि अथक सर्ग चका (स्या यकायन
 गनापिवनयं स्यादिऽपूर्वयो न स्या यथ मादा ॥ अथाश्रियां अकाजघन्य रुम मन्वा याश्च स्या यश्चि मं मा चं निवर्थ
 कं स्य र्हं सुटयवाक मल्ल हां साध नहानु सा मान्य मका कील कयक कऽरि नार्थका अन्य गन चक स्तान्य मना वयि अ
 वा वनं नेक रद मृद्वधु मविलम्बिर्गं अ नूनु यनु मर्मस्य गवाधनु निवर्जलं प्रह्वं यगि कूलं स्या दय सच मयस्य

वनवा मंहा नी न सवां स्या दय सवा नुद किं लं हा रु ट ना तु स म्वा धः कलिलं गहनं सम स की र्त्तुं सकला की (र्त्तु) म्
 लि गं य नि वा पि गं ग कि गं ग कि गं द वं वि स गं वि स ग न न गं अ न र्ज गं वि स गं स्या न् वा फौ हा रि न स म व लि गं अ पि
 गा धू न व लि ना क म्पि गा धू ग न रू नू ना रु नि द्वा ना वि द्वा कि फ वि ना स मा अ य नि कि फ नु नि व र्णं स वि गं म वि ६४
 गार्थ कं य व द्वा य स ग न्वा रु नि स र्ग गु हा ना ह न नि दि (ग्हा य वि ग ग रू ग र्फ गु ति न वू वि ग न रू ना व दी (र्त्तु
 दु रु (र्त्तु) घ ग का वि ग हा कि ग न द्वा हा द्वा ग दि ग्ध लि फ स म्द का द्वा ग स म य वि गं स्या द ल यि गं स म्वा नं नू द मा

व र्णं नू र्णं तु (अथ नि हा न रू न ह म ना नि ग जि ग न स्या दि ना (ह म न् र्वा य कं जी हा जी गो तु ल जि ग न व र्णं तु व रू वा व रू
 सं या जि न उ वा दि नः अ वा यं ग म्पं स मा सा द्यं स्य नं नी हां म्पं स र्णं सं गु रू ४ स्या त् सं क लि ना व जी गः र्वा ग ग र्हा ः
 वि वि धः स्या द्वा वि (ध ना ना नू यः प थ ग्वि धः अ व नी (ह म धि कू ग न्वा य व ध सा द्वा व रू ति नः अ ना या स
 क र्णं स रू स्य नि गं ध नि गं स म व द्वा स्या नि व म् रू म्दि गं स र्दि गं स र्गं निः य कं क थि गं या क की ना क य य सां
 ल र्णं नि र्वा (ह म नि व द्वा यो नि र्वा न तु ग न नि ल य कं य नि हा न ग र्णं रु न्ना मा रू नु म्दि ग न प रू व प वि गं सा द

[illegible]

गः प्री गः अचि नं द्य गं ल नं क रं द गं दि गं छि गं वृ कं म सु संध संध सु संध संध प मि गं च गं ग लि गं ल धं पा यं न ला वि ग मा सा
दि गं क रं ग रं अ चि वि गं ग व पि ग म चि हं मा द्वि गं मि गं आ दूं सा दं छि नं सि मि न कि सि गं स म ल क रं ग रं ग रं न कि ग
म वि गं (ग पा यि गं गु यं अ व ग हि ग म व मा नि ग म व ह्म गं अ व म नि ग रं य नि ह्म ग रं ह्म कं ही नं वि धू गं स म कि
गं धू ग म ल ह्म उ कं रा पि ग म दि गं ग मा र्वा ग म रि दि गं ला पि गं वृ क वृ द्वि गं नि गं पि दि गं य मि यं न म व सि मा व गं
उ वा क रं म लि क रं ग मा ह्म गं य मि ह्म गं स गी ह्म वि दि गं स ह्म ग स मा दि गं य ह्म ग्नी लि ग स ग य न्ना यी ग य पि ग य धी

गानीजविगार्श्ववर्तिगारिहू. गतिगानिमुगार्थनिगतिगवर्तिगलिफ. प्रत्यवखादिगप्रागंअत्यवदुगान्नजग्ध
 गुसुगसुहादिगंउक्तकपिष्टकादिष्टप्रष्ट. वनिस्तुविष्टवंदिष्टाऽक्षिष्टप्रष्टाऽलीफिष्टप्रष्ट. वनवदुप्रकर्षार्थऽसा
 ष्टादिष्टप्रष्टग. निष्टप्रसिस्तुवृदिष्टाऽवाटवायगवदु(गु. व. न्यावकाशनिहायन। ॥विहायनिष्ट ८७
 वर्जऽसा ॥प्रकृतिप्रत्ययार्थऽष्टसूक्ती(ह्रीलिङ्गमन्त्रयन्त्रकर्मक्रियागत्तागत्य. गम्यसूनयनस्पनाऽसा। सकल्यास
 ङ्गववन. पागायहायनाय(हा. यदृष्टा खेनिगाहयु. ह्यन्यात्वास्याविनकृतांहामथमुसमऽक्षानि. दीनिमुदम(थ

दमऽअवदानं कर्मवृत्तं काम्यदानं प्रवावर्तं वहाकृयासम्बदनं. मलकर्मगुकार्महांविधूननंविधूवनं. गय
 हांप्राप्तनावनंयर्थाफिऽस्यागुपविज्ञाहं. हस्तवानहमित्यपि। सवनसीवनंस्मृति. विदवऽसूटनमिदा। आका
 हानमहिष्टऽसम्बदावदनानना। संसृष्टनमहिष्टाफि. र्थाक्रूरिकार्थनार्दनानवर्द्धनं. ददनथद. आनदनस
 राजनऽआपठुनमथाप्रायऽसम्बदायऽदयक्रियागुहाग्रहव. हाऽकाको. वक्रुक्ता(हानहाऽक(हाभवा(धा
 वधयवायाक. हवाहूगोववाहूगो। वाषऽप्रापनयानाय. कानिर्कि(ह्रीजमात्रमो। स्मृतिवृद्धोपथाख्यागो. स्प

सुखदयनः सुखाय न निदय न आविधा विध्य न य न ग विद्य सुम नि यः उक्ता नश्च नि का नश्च दोष न्या कृ प हार्थ को न निः
 ग नो क्त न वि का वा द्वा हा सु ग न ह्मा दि वृ न् आ न ह्य व न गि न य उ य न म स्रिया नु वः नि ष्च गि न्नि ष्च व न नि ष्च व न मि त्य रि ना
 निः उ व न रु नि सा व सा न स्या द थ द्वा न् रु निः उ द ऊ मु य ह्य प्र न ह म क र्त्तु वि ह्या द यः ह म य (ग) ग न क सु वृ न् मि त्यो य ८२
 ग व का दि कं आ प्ति कं ह्मा कृ लि क म व मा द्य म व न सां मा ह वा ना नु मा ह वां सदा या नां सदा य नां ह त्या ह ना धां वा म
 ह्य वा उ वा उ दि ऊ न नां य य ह्मा कानां पृ ष्ठा नां या र्थ्यं पृ ष्ठा म नू क मा ग्ग ख लानां ख लि नी ख ल्या प्य थ मा न्वा कं वृ ह्मां ग्ग

म नो ऊ न ना ध स्या पृ थ क पृ थ क स म न् आ पि सा ह स का नी ष्वा र्म ह्मा इ थ वृ ह्मा दि कं ॥ ॥ स क्ती र्त्तु व र्जः ॥ ॥ नानार्थ
 क पि का ना दि व (र्ज) थ वा उ का र्त्तु नाः ह्मा नि प्र या ग म य य ष्वा य र्था य थ पि न ष्वा न् आ का (ह) नि दि व ना का ला क मु उ
 व न ऊ न य य ग सि व (ह्मा कः) ह न स्या ऊ व ह्मा य कः उ म्ब को क्ता ह्मा व न् (ह्मा) पृ थ को वि पि टा र्त्तु को आ सा को द र्त्तु ना
 धा नो र्त्तु ना य ह्मा मा न को उ स क्ति वि द्वा ना न ऊः क ल (ह्मा) इ क्ता य वा द याः न क्ता ना ग व र्त्तु का न कः सृ टि क सूर्य याः
 सा नू ग व ध मि व (ध) पं सि कः कं णि ना इ म्ब नाः स्या त्पू ला क मु उ धा न्वा सं क प र क सि र्त्तु क उ लू क क वि हाः पृ ष्ठा म्ब ला

या न व प व कः कमधुलो व क व कः स ग ग व वि ना य कः कि कृ र्द सु वि न सो व. वृ क की ट व वृ श्वि कः पु गि कूल पु गी क मि
 थ क द (हा) गु पं सा यं सा ह्नि क नु ह नि म्व क र्द (हा) ह्नि क (हा) पि व का त्सि का पा र्द धा व व का वा न क थ क ह ल सि ग व र वः
 दि सा म. व ल्कः सा द थ सि ह्नि क गि ल क ल्क व • वि ष्वा का वा डी कं ना म (०) पि व म रु द्ध गु गु ल ल क वा ल अ दि वृ को णि कः
 व का य णा सा ग कः स्व ल्प पि ह्नि क मि ष्वा ऊ वा ह कः णा (०) पि व म रु द्ध गु गु ल ल क वा ल अ दि वृ को णि कः
 म पि दी य कः णा ल वृ काः क पि का ह्नि नः स्व (०) पि (०) पि व म रु द्ध गु गु ल ल क वा ल अ दि वृ को णि कः

२०

या व नू क द्वा ल क हा क ल व ल्क ल सा ह्नि ग स व र्ण नां स म्वा र व (हा) य ल र दी ना व पि व नि का मि क ल्का मि स म ले न सा
 अ द म्वा य थ पि ना का मि ह्नि व क ह्नि व ध न्वाः (०) ध नू का गु क नि ष्वा क म ध जाल व का लि का का लि का या ग ना वृ द्वाः क
 र्द का क ह्नि व (हा) क नि ह्नि सा ह्नि लो य म. वी ज • का षां पि वृ द्वा वृ द्वा व को नू पि म्वा व क म्वा न्वा क व ल्काः सा द्वा मि
 क को कृ टि का य ष्वा द्वा वि ग ह्नि लाला टि कः पु र्द ह्नि ल द्वा का र्द म्वा य म्वा ह्नि न म्वा व ल य व क वृ क ट का मि यां
 म्वा य (०) द्वा द्वा व या म्वा र्द व क ह्नि कः का ना म म्वा र्द व क ह्नि क व काला स लि वा (हा) हिली म्वा र्द वानि (०) ल ल

तास्त्रिकम्वोनस्त्रियययिस्वंचिहिकालअविहिस्वस्वानावाहोलवृक्षोनगवगोमप्राहुगोवायविहिस्वोहानार्कविहग
ःखगाःयनकोयक्रियुयोवपूगःकमूकवृन्त्याःयहावायिमगवगःप्रवादजवयावयिनयनागःकोसूमवलोस्त्रानी
यादोनजस्यपिनगजपिनागमागकावपाकलिलकयिवसमर्जःस्वरावनिर्माकनिष्ठयाध्यायसृष्टिष्ययागःसन्नरुनाया २१
यध्यानसृष्टिगियुकिष्यरागःसुखस्यादिरुमावहृष्टरुहाकाययाःवानकद्विहोयंसिहानकःसवलप्रिष्यकयो
वस्रवगःहयत्वरिष्यकःपोनारवयानाद्यरुयगःयंसिपूगंयुगमकनादिष्यस्वर्गेष्यगुवाग्वज्जिह्वज्जिह्वरुज्ज

लालकदृष्ट्यामिषांयंसिगोर्लिङ्गविह्रारुसाःज्जग्राधनासान्वाञ्चवलावाङ्गमर्हगुद्ययाःरगंघाकाममादात्मव
र्ययत्तार्ककीर्लिष्यगमनाभायविद्यःयविद्यागसुयाद्यावृन्दंरसांनयमल्ययूजाविधवर्धोइहादःखयसनवयं
विधिहृल्लयलघुभाद्यानाभाकाकमर्हददृष्टज्जविद्ययोसविरुववप्रपक्षःपावकगुविभमास्यमत्यवाययः
रघयंसिम्याध्यासिगत्रिष्यअरिष्यरुस्यहायाकृगरुसोववृविःक्रियांवानाभाककानृपवधस्वननन्दीवृकपिः
समावधप्रसन्नरुक्कयद्यागुचुसुवकदावयाः॥शुनाभाककिनाम्नावदिशुकोदनविद्यागुजादिजाःअजाविह्र

रुद्रगुण (ग) शास्त्रनि वदात्रु जाधधर्मनाओति नयमो क (उ) दनापेना कुर्यां वल अ क पूरुं धी न वल जा वलु देर्हना स
मक्षां (ग) ना (ह) पाकिः प्रजास्यात् सन गो जन अ को हां स्वदा वम (हो व) स्व कनि स्य नि अ कुर्या जा ना क्षा पं स्वात्मनि पुं वी (व) व
क प्र हा वा चालि क कः सं हा सा च गनाना म द सा धे धार्थ स वना म अ न ना का क र ग (ओ) क न हो ॥ सु अ व ॥
ॐ ह्यम न सिं ह द्रु मो ना म ति ज्ञा नू म स न स मा न य ना स्व सि श्री ग रा स्य न र्ध

२२

समस्त रक्त कृष्ण मणि

पुनः वहादून कसा अरिनन्दन समावाह या ससगाय

दकाकः एणनल

१. यं ला ग ११०५

असं वलिकानमि. १